स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों,
पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.70/-

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ................................. Rs.80/-
3) ज्ञान माला.. Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।................ Rs.70/-
5) अगर मानव को योगी बनना है तो ?........... Rs.60/-
6) महात्माओं का संदेशों.............................. Rs.50/-
7) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
8) शाकाहार ही मानव का आहार है !.............. Rs.50/-

To subscribe to Tatavarthy's YouTube channel:

When you click the YouTube link sent in the WhatsApp group, it will open the Tatavarthy Veera Raghava Rao channel. Once open, you will see the "Subscribe" button-click on it to subscribe. By clicking the bell icon next to it, you can receive notifications of new videos everyday.

Otherwise, visit www.tst.org.in/videos/ Click on "Tatavarthy Veera Raghava Rao" in Section I, or on the names in sections II & III. This will open the respective channels. Once open, click the "Subscribe" button, and by pressing the bell icon next to it, you can get daily video updates.

स्त्री जन्मों में, पुरुष जन्मों में, सीखने वाले विषयों क्या-क्या है ?

सहज बात है कि अपने आप को स्त्री या पुरुष समझना। लेकिन यह सारे हमारे जन्मों है। स्त्री है तो स्त्री जन्म, पुरुष है तो पुरुष जन्म है। मतलब हम ना तो स्त्री है ना तो पुरुष है, हम सब आत्माएं हैं। आत्माएं जो हम हैं, या तो मूल आत्मा, या तो पूर्ण आत्मा से निकले हुए अंशात्मा है। जब यह अंशात्मा एक शरीर में प्रवेश करता है, उन्हें जीवात्मा कहते हैं।

इस जीवात्मा को उस पूर्ण आत्मा ने एक लक्ष्य निर्देश करता है। वह क्या है कि, तुम पृथ्वी पर बहुत कुछ पाठों सीख कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, हमारे स्थाई पहुंचना है मतलब पूर्ण आत्मा बनना है। तब तक आपको जन्म लेता ही रहेंगे, ऐसे कह कर जनन और मरण चक्र में प्रवेश करती है। ऐसे ही हर कोई मानव जन्म में प्रवेश करते हैं। तब से आपका कर्म चक्र शुरू होता है।

इस प्रकार जनन मरण चक्र में प्रवेश किया अंशात्मा, पूर्ण आत्मा बनने के लिए लगभग 400 से 500 जन्मों लगता है। यह बात पत्री जी ने बताया है।

ऐसे जनन मरण चक्र में प्रवेश हुए आत्माओं को बहुत कुछ सीखना है, क्योंकि उन्हें भी पूर्ण आत्मा बनना है। क्योंकि पूर्णात्मा सब कुछ जानता है। पूर्णात्मा को सह सृष्टि करता कहलाते हैं, मतलब को क्रिएटर कहते हैं ।

सृष्टि करता, इस सृष्टि में कई सारे लोकों को सृष्टि किया है, कई प्रकार के जीवन को सृष्टि, करता रहता है! इस प्रकार, अंशात्मा, मतलब हमें भी उस पूर्णात्मा के स्थाई तक बढ़कर ऐसे कार्यों कर सकते हैं। तब ऐसे कार्यों करने के लिए हमें बहुत कुछ सीखना है ना?

इसीलिए इतने जन्मों लेने पड़ते हैं। इसीलिए अंशात्मा को बहुत सारे पाठों सीखने के लिए आधा जन्मों स्त्री और आधा पुरुष जन्मों लेते हैं। इतना ही नहीं, कई मजहबों में, प्रांतों में, जातियों में, परिवारों में, कई प्रकार

जन्म लेकर अनेक प्रकार पाठों सीखती है। क्योंकि सारे पाठों एक ही जन्म में मुमकिन नहीं है। एक ही लक्षण को सीखने के लिए कई जन्मों पड़ सकता है। ऐसे कई जन्मों में सीखते सीखते, अंत में हर एक आत्मा पूर्णात्मा बनती है। इस लक्ष्य हासिल करने तक आत्मा को संतुष्टि नहीं होती है।

जैसे आप अपने घर छोड़कर कई राष्ट्रों या विदेश में घूमने जाते हैं। वहां पर आप मस्ती करते हैं, लेकिन फिर भी वही रहने को नहीं सोचते हैं, और सोचते हैं कि मैंने कब अपना घर लौटना है। इस प्रकार पूर्णात्मा से निकले हुए अंशात्माएं, हम अपने स्वलोक, मतलब, पूर्णात्मा रहने वाला सत्य लोक, पहुंचने तक हमें संतुष्टि नहीं होगा।

देखिए आप कहीं भी जाए, अपना घर को पहुंचना ही है! हमारा स्वगृह, सत्यलोक है। वहां पहुंचने तक हमारा यह सफर रुकता नहीं है। अगर वहां पहुंचना हैं तब हमें कई सारे पाठों सीखना है, और कई सारे अनुभवों पाना है। बहुत सारा ज्ञान प्राप्त करना है।

इसीलिए स्त्री जन्मों में क्या सीखते है ? पुरुष जन्मों में क्या सीखते हैं ? अभी इन विषयों के बारे में जानते हैं।

स्त्री जन्मों में मुख्यतः सीखने वाले विषयों: 1.प्रेम, 2.सब्र, 3.सहनशीलता, 4.त्याग गुण, 5.पवित्रता ।

पुरुष जन्मों में मुख्यतः सीखने वाले विषयों: 1.धैर्य, 2.वीरता, 3.निर्भयता, 4.साहस और, 5.लीडरशिप ।

यह सिर्फ कुछ ही मुख्य विषयों है और भी ज्यादा सीखते हैं। ऐसे, जन्म लेने के बाद, स्त्री जन्मों में कुछ, और पुरुष जन्मों में कुछ, सीखते हैं। इस जन्म परंपरा में प्रारंभ जन्मों में मतलब 100 से 150 जन्मों में रहने वालों का स्थिति और मध्यस्थ जन्मों में मतलब 150 से 300 जन्मों वालों का स्थिति और आखिरी जन्मों में मतलब 300 से 400 जन्मों वालों का स्थिति अलग-अलग रहता है।

यहां पर जो स्त्री जन्म में सीखे हुए विषयों को, दोबारा पुरुष जन्मों में जब आते हैं, जबकि वह पुरुष जन्म में है, स्त्री जन्मों में सीखे हुए लक्षणों

उनमें दिखाई देते हैं। अगर पिछले जन्म स्त्री में सीखा हुआ प्रेम तत्व, जबकि वह पुरुष जन्म लिए हैं, इस प्रेम तत्व दिखाते हैं और प्रदर्शन करते हैं।

इसी प्रकार अगर पिछले जन्म पुरुष जन्म है उसमें धैर्य सीखे हैं और अभी स्त्री जन्म लिया है तो वह धैर्य का लक्षण को प्रदर्शन करते हैं। उस पत्नी और पति को देखेंगे तो ... उस स्त्री का धैर्य गुण, उनके पुरुष में नहीं रहता हैं। और कभी हम देखते हैं कि कुछ पत्नियों अपने पतियों से पूछते है क्या आप मर्द नहीं है क्या? क्योंकि वह पुरुष ने अभी धैर्य का लक्षण नहीं सीखा है।

इसी प्रकार स्त्री जन्मों में सीख कर पुरुष जन्मों लेने के बाद भी उन लक्षणों को प्रदर्शन करते है। उसी प्रकार पुरुष जन्मों में सीखने वाले लक्षणों को स्त्री जन्मों में भी प्रदर्शन करते है।

सहज बात है की पूछते है कि इतने जन्मों किस लिए? एक ही जन्म में सब कुछ नहीं सीख सकते हैं क्या? लेकिन किसी को भी, एक गुण या लक्षण को बदलने के लिए कई जन्मों ही लगते है। इसलिए कहते हैं कि, ''जन्म से आने वाली बुद्धि, अंत तक रहती है''।

असलियत में जिनको दृढ़ निश्चयता नहीं है, एक-एक लक्षण हासिल करने के लिए कई जन्मों लगता है। अगर अपनी दृढ़ निश्चयता से हासिल करना चाहते हैं, तब भी इस सृष्टि में सीखने वालों और हासिल करने वाले विषयों बहुत कुछ है। मुझे ज्ञान बढ़ते बढ़ते समझ आया कि सीखने के लिए बहुत कुछ है।

बहुत लोग पूछते हैं कि मुझे भगवान क्यों पैदा किया है ? क्यों मुझे इतना दुख दे रहा है ? मैंने थोड़ी मांगा है क्या? करके बहुत दुखी रहते हैं। लेकिन वह कष्टों करके समझते हैं। लेकिन उन्हें मालूम नहीं है कि उन कष्टों द्वारा उन्हें पाठों सीखना है करके। उन कष्टों द्वारा वह लोग बहुत पाठों सीखते है।

अगर आप स्त्री भी हो, या पुरुष भी हो, आपके जीवन में जो कुछ हो रहा है, उनसे संतोष होना या दुख होना नहीं है। जैसे अभी एक संगठन

हुआ है, यह लड़ाई हुआ है, या कुछ लाभ हुआ है, या नष्ट हुआ है ! उसमें से क्या सीखना है ? इस दृष्टिकोण से आपको सोचना है। जरूर उस संगठन से आपको कुछ सीखने को होगा। जब वह सीखेंगे तब आप जल्दी बढ़ेंगे। अगर जल्दी बढ़ेंगे तभी आपको जन्मों कम होते रहेंगे।

इसीलिए लाभ आने से खुशी होना, या नष्ट होने से दुखी होना नहीं चाहिए। अगर नष्ट हुआ है तो क्या सीखना है ? लाभ मिला तो क्या सीखना है ? यह बात जानना चाहिए। उसको सीखने का प्रयास करना चाहिए, बल्कि बैठकर रोने धोने नहीं करना चाहिए।

याद रखिए लाभ शाश्वत नहीं है, या नष्ट भी शाश्वत नहीं है, ना तो आपका सुख, या दुख। इस सृष्टि में,आपके जीवन में कुछ भी शाश्वत नहीं है। जब यह समझ आएगा कभी आपकी जिंदगी में दुख नहीं होगा।

आपको याद रखना है कि, जो भी आपकी जिंदगी में हो रहा है, वह सभी पाठों सीखने के लिए ही हो रहा है। पत्री जी ने कहा है ना ? कि आपका ऐसे जन्मों को आप खुद ही चुनकर आते हैं। उस तरह का जन्म क्यों लिए हैं ? उस जन्म, मतलब स्त्री जन्म द्वारा, या वह गरीब का जन्म द्वारा, उस जाति में, मजहब में, उस देश में, उस प्रांत में, सीखने वाले विषयों को सीखने के लिए ही उस तरह का जन्म लिए हैं, यह समझना चाहिए।

बहुत लोग सोचते होंगे कि, कितना अच्छा होता उस जाति में पैदा हुआ हो तो, या धनवान के घर में पैदा हो तो अच्छा होता, नहीं तो उस देश में अच्छा होता, मैं, इस जंगल में पैदा हुआ हूँ। लेकिन यह सभी सीखने के लिए ही इस तरह का जन्म लिए हैं ! इसीलिए किसी चीज के बारे में दुख होने का कोई बात नहीं है। कुछ भी हो, सब कुछ अपना ही अच्छा के लिए, अपना बढ़ोतरी के लिए ही, हम अपने जीवन में सीखते ही रहना है।

कुछ लोग बच्चे नहीं होने पर दुखी होते हैं। लेकिन उससे भी सीखने के लिए होता है। बच्चे होने से क्या ? नहीं होने से क्या ? पत्री जी ने कहा है ना ? किसी के ऊपर या चीज़ पर, ममकार नहीं रहना चाहिए ? पिछले जन्मों में आपका ममकार रह गया, इसी के लिए बिना बच्चों वाले जन्म लिए

हैं, अपने बढ़ोतरी के लिए।

इतना ही नहीं पिछले जन्मों में आपका किए हुए पापों से भी कुछ बातों सीखने के लिए आपके बच्चे नहीं हो सकते हैं। आप पिछले जन्मों में बहुत सारे अंडे खाए होंगे। मतलब जब इस भूमि पर एक जीव को जन्म लेने का प्रयत्न कर रहा है, अपनी रुचि के लिए, या भूख के वजह से, उस अंडे को खा लिए हैं। इस जन्म में उस जन्म का पाप कर्म का पाठ सीखने के लिए, इस जन्म में बिना बच्चों वाला जन्म लिया है।

असलियत में तुम यहां बच्चों के लिए नहीं आया है। आप आत्मा है, आपका लक्ष्य हासिल करने आए हैं का विषय, भूलना नहीं चाहिए।

बच्चे होने वाले लोग अपने बच्चों के ऊपर ममकार के वजह से अपना पूरा जन्म ही उनके ऊपर खर्च करते हैं, कोई दूसरा काम नहीं करते हैं। हम जो आत्मा हैं, हमें बहुत कुछ सीखना है, बढ़ोत्तरी करना है का विषय जानता नहीं है। तभी अपनी बेटी या बेटा पर, ममता के वजह से उन्हीं के लिए अपना पूरा जिंदगी बिताते हैं और बहुत नष्ट होते हैं।

ऐसे ही कुछ पाठ सीखने वाला जन्म ही है, बल्कि, कहो कितने जन्मों में बच्चे पैदा नहीं किया है ? किसको बच्चे नहीं होता है ? अगर हर बार बच्चों के साथ ही बिताएंगे, तब कब सीखेंगे ? एक पत्री जी जैसे, या शिरडी बाबा जैसे, या सत्य साईं बाबा जैसे, वेमना जैसे, विवेकानंद जैसे बनना है ना ?

बच्चों पर ममकार, उनसे मस्ती करना, उनको नहीं होता है। वह सभी पिछले जन्मों में सीख लिए हैं, और क्या सीखेंगे ? इसीलिए कुछ लोग श्री शंकराचार्य जैसे, या श्री विवेकानंद जैसे विवाह नहीं करते हैं। उनको जन्मों नहीं चाहिए बल्कि जीवन का लक्ष्य चाहिए। उनको पूर्ण आत्मा बनने का है, एक सह सृष्टि करता बनना है। सत्य लोक पहुंचना है, का तीव्रकांक्षा रहता है और उसके दृष्टि किसी चीज के ऊपर नहीं रहता है ।

अगर किसी चीज पर ममकार रहेगा फिर से जन्मों लेना पड़ता है। उसी में फंस जाएंगे तो कैसे ? असलियत में आप कौन हो ? कहां से आया है ?

किस लिए आए हैं ? यह क्यों नहीं सोचते हो ? अपने को स्त्री कहते हो, या इस जाति से, या मजहब से, या तो मस्ती करने को सोचते हो। कोई पति या पत्नी या बच्चे मरने से रोता है। आत्मा, जो आप है, ऊपर लोकों से किस लिए आए हैं ? रोने धोने के लिए थोड़ी आए हैं ? या पाठों सीखने के लिए ?

इसीलिए आपको, हर वक्त जो भी हुआ है, हो रहा है, अपने आप से पूछना है कि उससे मुझे क्या सीखना है ? बल्कि रोना नहीं है कि ऐसे हुआ है। यह रोग आया है, यह आर्थिक स्थिति ऐसा हुआ है, मुझे इससे कैसे निकलना है ? नहीं तो मेरे बुढ़ापे में मुझे और अपने बच्चों को कौन देखेगा ? लेकिन आपको जो करना है, करते रहिए, आपको जो होना है वह होगा।

जो भी आपको भूमि पर भेजा है क्या आपको भूखा रहने देगा ? श्री राम तीरथ को ऐसे ही वैराग्य हुआ है। उन्होंने मोक्ष पाने के लिए एक छोटा सा थैली में एक अंग वस्त्र, एक लोटा, एक गिलास रखकर सब कुछ छोड़ दिया है। जहां भी हो सकता वहां बैठकर साधना करता रहा। जहां भी हो, लोग उनको, कुछ ना कुछ खाने को देते ही रहते थे।

ऐसे ही सफर करते रहे और उनको ऐसा लगा है कि, क्या मैं इस बोरा को भी साथ में लेकर जा रहा हूँ ? जो भी मुझे सृष्टि किया है क्या वह मेरे जरूरतों को पूरा नहीं करेगा ? ऐसे सोच कर उसने बोरा को भी बाजू वाला नदी में फेंक दिया है। तब उनके पास कुछ भी नहीं था। ऐसे ही अपना साधना पर ही दृष्टि रखा है। उसको कोई ना कोई कुछ ना कुछ ले आते थे।

उस समय हमारे पास सब कुछ होने पर ही अपना जीवन चलेगा का सोच ही बहुत मूर्खता का बात है। उनके जीवन से हमें सीखना है। इसीलिए हमें कुछ कमाने के ऊपर दृष्टि रखने से जन्मे बढ़ेंगे, बल्कि और कुछ नहीं होगा। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि अपने जरूरतों तक सीमित रहना है।

आपको रहने के लिए अपना खुद का घर या तो किराया का घर है ना ? खाने को कुछ है ना ? पहनने को कुछ कपड़े है ना ? सह जीवन के लिए एक साथी है ना ? इन सब को देखना चाहिए।

जब आपका जरूरतों पूरा हो रहा है, बाकी समय को पाठों सीखने

के लिए, ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इसीलिए मैं आपको भीमावरम क्लास को नहीं छोड़ने को कहता हूँ, कुछ भी हो, आने का प्रयत्न करने को कहता हूँ, और जूम क्लास को भी नहीं छोड़ने को कहता हूँ।

आप में से बहुत लोग सोचते होंगे कि यह रिकॉर्ड हो रहा है, बाद में सुन सकते हैं। लेकिन जूंम क्लास लाइव में आप सुनेंगे तो वह गरम डोसा खाने जैसा है। और जब रिकॉर्डिंग देखते हो तब ठंडा वाला डोसा जैसा है। जब लाइव है तब आपको वह आगे क्या कहेगा ? का इंतजार करते हैं और आगे सीखने को सोचते हैं। और अगर कुछ काम करते सुनेंगे तो आप उतना ध्यान नहीं रखते हैं, और सिर्फ सुनकर छोड़ देते हैं।

जब जूम लाइव सुनेंगे अच्छी तरह समझेंगे और तभी आचरण में ला सकेंगे। इसी प्रकार जितना ज्यादा श्रद्धा रखेंगे उतना ज्यादा पाठों सीखेंगे, और उतना जन्मों कम करेंगे।

उतना ही नहीं आपको समझना है कि आपका कष्ट और नष्ट सिर्फ पाठों सीखने के लिए ही आए हैं ।

जैसे कि पति और पत्नी के बीच में झगड़े होते हैं और आप समझते हैं कि क्या मेरा जिंदगी ऐसे हो गया है। जब आपको समझ आता है कि आप आत्मा है तब आपको समझ आएगा कि उन समस्याओं से आप पाठों सीख सकते हैं। तब मूर्खता में नहीं रहेंगे, जिद्दी नहीं रहेंगे, और किसी भी विषय पर आपको आंदोलन नहीं होगा, और कोई दुष्ट कर्म नहीं करेंगे, धर्म नहीं छोड़ेंगे, सृष्टि का नियमों को जानते हैं, इसके अनुसार ही जिएंगे।

इसीलिए जिनको सत्य को मालूम है कि वह आत्मा है, उनका दुख नहीं होता है, सब कुछ सीखने के लिए ही है, का समझ आता है, तब सब कुछ आनंद ही है। एक प्रकार से इस सत्य मेरा जीवन को ही बदल दिया है। जब मैं अपने को शरीर समझा था तब मुझे और ज्यादा कमाने का इरादा रखता था। जब से मुझे समझ आया है कि मैं आत्मा हूँ तब मुझे लगा है कि क्या फायदा है उतना ज्यादा कमाने से ? इस कमाई से आत्मा का कुछ भी लाभ नहीं होना है ? यह विषय समझ आया है ।

और साथ में इस धन कमाने में इस शरीर से पापों, और गलतियां, और अधर्म तरीके से कमाने से आने वाला फल का अनुभव करने के लिए फिर से जन्म लेना है, का समझ आकर, मैं अपने सारे व्यापारों को बंद कर कर, सिर्फ और सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने पर ही दृष्टि रखा हूँ। इस शरीर केवल पाठों को सीखने के लिए ही है, का विषय जान चुका हूँ।

ऐसे अवसर ही इस सृष्टि में दिया हुआ है। इस शरीर कितने सालों रहेगा? कितने सालों तक काम करेगा? जब सोचेंगे, तब समझ आती है कि बाल्यावस्था में काम नहीं करेगा, बुढ़ापे में नहीं करेगा, युवा अवस्था में मौज मस्ती में निकल जाता है। असलियत में आत्मा के बारे में सोचने के लिए समय ही कहां है ?

इसीलिए श्री शंकराचार्य जी ने कहा है,

बालस्तावत्क्रीडासक्तः

तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः।

वृद्धस्तावः चिंतासक्तः

परसे ब्रह्मणी कोपिन सक्तः।।

तात्पर्य : बचपन में खेल कूदने में आसक्ति रखते हैं, युवा अवस्था में स्त्री के व्यामोह में, बुढ़ापे में संसार के चिंता में अपना पूरा जीवन बिताते हैं, लेकिन कोई भी, परम ब्रह्म पर आसक्ति नहीं दिखा रहा है।

तब आप जो आत्मा है, उनके बारे में कब सोचेंगे? कहते हैं श्री शंकराचार्य जी। सिर्फ आना-जाना ही है क्या? इसीलिए वह कहते हैं, ''**पुनरपि जननम पुनरपि मरणम**''।

इसलिए अगर आप देह के भाव में ही रह जाते हैं, आप अपना जन्म व्यर्थ करते हैं। जब आप आत्मा है का अवगाहन होने से, आप बहुत कुछ सीख सकेंगे। यह शरीर आत्मा के लिए बहुत मूल्यवान अवसर है। इसीलिए जो अपने को शरीर समझता है, उनका प्रवर्तन, और जो अपने को आत्मा समझता है, उनका प्रवर्तन, बहुत ही अलग रहता है ।

जो अपने को शरीर समझता है दूसरों को अपने से अलग समझता

है। दूसरों को विमर्श करता है कि वह गलत कर रहा है। दूसरों को देखकर असूय में रहता है, रोता रहता है, बाजू वाला के ऊपर द्वेष रखता है। उनको यह सच्चाई मालूम नहीं है कि वह आत्मा है और दूसरे लोग भी आत्माएं हैं, वह भी अपनी बढ़ोत्तरी केलिए आए हैं ।

जो अज्ञानता में रहता है अपना काम को नहीं देखता है, हर वक्त दूसरों का बात ही करता है। और उनके बारे में ही सोचता है। पत्री जी कहते हैं कि दूसरों का झंझटों में क्यों पढ़ना है ? जिसको जो सीखना है वह सीखेंगे, आप अपना काम देखो। वह कहा है कि, ''नो कमेंट्स'', मतलब दूसरों को विमर्श नहीं करना है।

पत्री जी ने एक संदर्भ में कहा है कि, जो भी इस भूमि पर आए हैं, सभी लोग अपने-अपने स्थाई पर गलतियां करते रहते हैं। इसीलिए कोई भी ऐसा नहीं है कि वह गलतियां नहीं करता है।

"A" लेवल वाला "A" गलतियां करता है। तब "B" लेवल वालों को "A" लेवल वाला गलत दिखता है। जब यह "A" वाला "B" पहुंचता है, तब उसे "A" वाला का गलतियां दिखते हैं। इसी प्रकार जो "Z" लेवल पहुंचा है, उनको "Y" लेवल वाले गलतियां दिखते हैं।

इसी प्रकार अपने-अपने स्थाई पर सभी गलतियां करते रहते हैं। इस प्रकार सभी लोग अपनी गलतियों को सुधारने के प्रयत्न में ही है। पाठों सीखते हैं, गलतियां को ठीक करते हैं । जब वह ऊपर "Z" लेवल पहुंचता है, जब वह पूरी तरह से गलतियां नहीं करता है, तभी उनको फिर से जन्म नहीं लेना पड़ता है।

यह भगवा कपड़े पहनने से सबको धोखा देना जैसा ही है, इसके अलावा कुछ नहीं है। बहुत उच्च स्थाई पहुंचने पर भी, अगर वह ऐसे कपड़े पहने हैं, तब वह भी गलत काम कर रहे हैं। स्वामी विवेकानंद के विषय के बारे में पत्री जी वही कहते हैं।

ऐसे ही श्री रामकृष्ण परमहंस विवाह कर कर, पत्नी को जो सुख देना था वह नहीं दिया और उन्हे माता समान देखा था। वह भी उनके स्थाई पर

गलत ही है। यह सभी गलतियों को ठीक करने के लिए दोबारा जन्म लेना पड़ता है। इसी प्रकार उस स्थाई लोग अपने शक्तियों प्रदर्शन करते हैं। लोगों को आकर्षित करने के लिए, यह भी गलत है। क्योंकि लोगों को अपनी ज्ञान से आकर्षित करना चाहिए। इसीलिए पत्री जी, जबकि उनका शक्तियां है, वह कभी दिखाया नहीं है।

इसीलिए जो भी अपने को आत्मा का समझ है, वह हर स्थिति से कुछ सीखने का भाव में रहता है। जो भी शरीर है का भाव, अज्ञानता में रहता है, वह गलतियां करता ही रहता है। यहां पर सभी आत्माएं हैं ना? सभी मूलात्मा से ही आए हैं ना! सभी एक है ना ! कुछ लोग ज्यादा जन्मों लेकर सीखे हैं और कुछ लोग कम जन्मों वाले उतना नहीं सीखे हैं, उतना ही फर्क है। कुछ जन्मों बाद वह भी उस स्थाई तक पहुंचेंगे ।

अगर उनके कर्मों में कुछ गलत दिखता है तब उसको खंडन करना है, विमर्श नहीं करना है। पत्री जी खंडन करते थे, उसने मूर्ति का आराधना मना किया है। लेकिन मूर्ति का आराधना करने वाले बहुत करोड़ों लोग हैं। जब मना करते हैं बहुतों को बुरा लगता है। कुछ लोग समझते हैं कि क्या यह सभी को मजहब बदलने को आया है क्या? वह किसी को विमर्श नहीं करते थे, लेकिन उसके अज्ञानता में करने वाले कर्मों को खंडन करते थे, बस वही करते थे।

कहते थे कि आप सत्य को जानिए, और सत्य का आश्रय करिए। सत्य को पकड़ने वाले जय होकर आगे बढ़ता है। असत्य को पकड़ने वाले अपना जीवन को बेकार करता है । इसलिए खंडन करते थे।

इसी प्रकार उसने ''मांसाहार खाना नहीं, शाकाहार ही सही'', को कहा था। बिना हिचकिचा कर, निर्भय के साथ कहा था। इस संसार में मांस खाने वाले ज्यादा ही लोग हैं। सब सोचते हैं कि क्या यह ऐसे बोल रहा है? मेरे दादाजी, उनके दादाजी लोग भी खाते थे। कुछ लोग इस व्यापार छोड़ने से उनका कैसे चलेगा करके पूछते हैं? जो कुछ भी समझे, लेकिन फिर भी सत्य को निर्भयता से आगे रखते थे।

पत्री जी का 18 आदर्श सूत्रों में, 14 –व सूत्र, मूर्ति का आराधना मना किया है और सत्य का आराधना करने को कहा है। उसने कहा है कि, सत्य को ही भगवान मानते हैं, और मूर्ति को भगवान नहीं मानते है। जो मानव का बनाया विग्रह या मूर्ति को भगवान कैसे हो जाता है ? मानव को जिसने बनाया, वही भगवान है और वही सत्य है और उन्ही को पकड़ना चाहिए। यह बात बिना हिचकिचा कर कहा है। शुरुआत में मैं समझता था कि इसी एक सूत्र निकलने से कितना अच्छा होता, और चिंतित रहता था।

जब यह सत्य को समझने के बाद, तब देव कौन है ? का मालूम कर कर, मांसाहार के ऊपर ही एक किताब लिखा हूँ। तब मुझे पत्री जी के बारे में समझ आया है। कितना धैर्य से यह सत्य सबको बता रहा है। तब से मैं भी धैर्य से बता रहा हूँ। इसीलिए जो आप को मालूम है, वही ठीक है, को नहीं समझना है अभी। आपके इस ज्ञान स्थिति में आपको ऐसा लग रहा है। सत्य जानकर, आपका ज्ञान बढ़ाते बढ़ाते अपना राय खुद ही बदलेंगे।

बहुत लोग मैं शरीर नहीं हूँ मैं आत्मा हूँ को जानना ही ज्ञान समझते हैं। लेकिन इस भौतिक आंखों के बाहर, जो नहीं दिखता है, उनके बारे में जानना ही ज्ञान है। इस भौतिक आंखों से मालूम करने वाले विषयों पूरा अज्ञानता ही है। इन आंखों से नहीं मालूम करने वाले विषयों ही ज्ञान है । वह जितना ज्यादा है उतना ज्यादा ज्ञानी है । इन आंखों से जो भी जानते हैं वह सभी असत्य है। इन आंखों से नहीं जाने वाले विषयों ही सत्य है।

जो भी इन आंखों से जान लिए हैं और अपने आप को ज्ञानी समझेंगे तब वह गलत है। जितना भी जाने हो, वह अज्ञानता ही है। जो भी अपने आंखों को दिखता है वह नहीं रहने वाले हैं । सब कुछ नाश होने वाले हैं, और शाश्वत नहीं है। तब यह दिखने वाले विषय असत्य है। जो भी अपने तीसरी आंख से देखते हैं वही सत्य है। इस शरीर से इस विनाश होने वाले प्रपंच में ही घूम सकते हो। लेकिन अपना सूक्ष्म शरीर से इन आंखों को नहीं दिखने वाले विषयों और लोकों में घूम सकते हैं और बहुत विषयों को जान सकते हो।

हम इस सारे ज्ञान को पाने के लिए ही यह अतीन्द्रिय शक्तियां हैं।

जब आप तीव्रता से साधना करेंगे, जब आपके अंदर उतना तपन रहता है, और किसी दूसरे विषयों पर आशक्ती नहीं है, अगर आपको उन विषयों को सीखने का जरूरत रहेगा, उस प्रकृति ही आपको शक्ति देती है। किसी को भी देती है, उसको अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करना है। लेकिन अपना स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं करना है।

इसलिए हम या स्त्री हो, या पुरुष है, कोई भी हो आत्मा ही है। इस विषय का याद रखना चाहिए। यह शरीर कुछ पाठों सीखने के लिए ही लिया हूँ। बल्कि मौज मस्ती के लिए नहीं, अनुभव करने के लिए, सुख पाने के लिए नहीं, का समझ होना है ।

ज्ञान बढ़ने पर आपको किसी चीज़ का दुख नहीं रहेगा। अज्ञानता में रहने से ही दुख होता है । इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि, ''अगर हल्का सा भी दुख आपके अंदर है, मतलब आप अज्ञानता में ही है''। सीता माता जबकि अपना पति से दूर हुई है, फिर भी अशोक वन में भी वह कभी शोक नहीं जताई। क्योंकि वह ज्ञानी है ।

इसलिए अभी हम स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों जानते हैं।

स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों।

मुख्यत: स्त्री जन्मों में प्रेम, सब्र, सहनशीलता, त्याग, पवित्रता, जैसे गुण सीखते हैं। इनमें से सबसे पहले प्रेम के बारे में जान लेते हैं।

(1) प्रेम।

स्त्री लोग अपने पति और बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। स्त्री लोगों को सबसे पहले वही आते हैं। उनके लिए अपने सुखों को त्याग करते हैं। उनके ऊपर प्रेम ही कारण है।

मानव लोग अपने प्रारंभ जन्मों में तमोगुण में रहते हैं। 100 से 150 जन्मों बाद रजोगुण में आते हैं। 150 से 300 जन्मों के बाद सात्विक गुण में आते हैं। 300 से 400 जन्मों के बाद वह शुद्ध सात्विक गुण में आते हैं। 400 से 450 जन्मों के बाद निर्गुण स्थिति में आते हैं।

यह तमोगुण वालों का लक्षण है आलसी तत्व। वह हर समय सिर्फ अपने लिए सोचते हैं। रजोगुण वाले को अहंकार रहता है। मैं, मैं, का भाव ज्यादा रहता है। सात्विक गुण वालों को, थोड़ा, सब के बारे में सोचते हैं। निर्गुण वालों को निस्वार्थ से सबको प्रेम करते हैं। तमोगुण देह स्थिति, रजोगुण मनो स्थिति, सात्विक गुण बुद्धि स्थिति, और निर्गुण आत्मा स्थिति है।

मतलब तमोगुण में शरीर को प्रमुखता देते हैं। रजोगुण में मानस को प्रमुखता देते हैं। सात्विक गुण में बुद्धि को प्रमुखता देते हैं, मतलब बुद्धि अच्छी तरह काम करती है। निर्गुण में आत्मा को प्रमुखता देते हैं, मतलब, आत्मा स्थिति में जीते हैं।

इसलिए यह गुण बदलने से एक स्त्री में भी यह प्रेम का भाव भी बदलता रहता है। धीरे-धीरे यह तमोगुण, रजोगुण में सीमित प्रेम भाव से सिर्फ अपने पति और बच्चों को प्रेम करते हैं। सात्विक और निर्गुण स्थिति में असीमित प्रेम भाव रखते हैं। न केवल अपने पति और बच्चों, सबको प्रेम करते हैं और करने का स्थाई तक पहुंचते हैं।

इस प्रकार यह प्रेम तत्व को, स्त्री जन्मों में ज्यादा सीख पाते हैं। पुरुष जन्मों में भी सीखते हैं, लेकिन स्त्री जन्म से ज्यादा नहीं। इसलिए अगर किसी को यह प्रेम का लक्षण बढ़ाना है, तो , पूर्णात्मा स्थिति तक पहुंचना है। पूर्णात्मा कौन है ? भगवान है। वह प्रेम का स्वरूप है। प्रेम उनके, सहज गुण है। इसलिए पूर्णात्मा स्थिति तक पहुंचते पहुंचते प्रेम सहज लक्षण बन जाता है।

इसलिए सत्य साईं बाबा जी, प्रेम और सेवा के बारे में ज्यादा बताते हैं। हर एक गुरु मानव लोगों में एक-एक लक्षण को सीखने के लिए ही यहां भूमि पर आते हैं। यह सात्विक गुण लक्षण को सबके अंदर लाने के लिए ही सत्य साईं बाबा का अवतार का लक्ष्य है। पत्री जी का जन्म लक्ष्य क्या है ? यही सात्विक गुण में आने वालों को निर्गुण स्थिति में लेकर जाने का प्रयास है।

उसके लिए साधना दिया है और यह सात्विक गुण को पार कराने का प्रयास किया है। उसने कहा है कि, किसी को भी तमो और रजोगुण का

दोष रहते हैं। साथ में सात्विक गुण का भी दोष रहता है, का विषय बताया। और उनको पार करने के लिए "श्वास पर ध्यास" ध्यान साधना भी दिया है। उस तरह का ज्ञान भी बांट लिया है।

इसी तरह स्त्री जन्मों में कोई भी, प्रेम तत्व को अच्छा सीखते है। पहले में सीमित प्रेम रहता है। धीरे-धीरे दैविक लक्षण, असीमित प्रेम तत्व, बन जाता है। इसके लिए "श्वास पर ध्यास" ध्यान साधना बहुत उपयोग होता है। जो भी यह "श्वास पर ध्यास" ध्यान करता है, धीरे-धीरे उनके मनस का प्रभाव को कम कर कर, आत्मा का प्रमुखता बड़ा कर, उनमें उन लक्षणों धीरे-धीरे आते हैं।

(2) सब्र।

स्त्री जन्मों में सीखने वाला एक और लक्षण है 'सब्र' है। स्त्रियों में सब्र रहने की शक्ति ज्यादा ही होता है। उनके जीवन में बहुत कष्टों रहते हैं। जितने भी हो अपने बच्चों के लिए सब्र गुण से अपना परिवार को आगे बढ़ाती है।

इसी प्रकार संभोग के समय में भी पति को सब कुछ देने के लिए बहुत सब्र दिखाती है। अपनी सुख से ज्यादा, पति का सुख को ही देखती है। इसीलिए उस समय जितना भी कष्ट देता है, उनको छोड़ने का इच्छुक नहीं रखती है। इसीलिए बड़ों ने कहा है कि स्त्री जन्मों में सब्र गुण सीखने के लिए ही है।

इतना ही नहीं जब पति मर जाता है तब वह बहुत सब्र रखती है, कारण अपने बच्चों के लिए त्याग करती है। स्त्री जन्मों में कितना सब्र रखते है, बिना पति वाले ही समझेंगे। अगर पत्नी गुजर जाती है, तब वही पुरुष, दूसरी स्त्री से शादी करता है। दो नहीं तो तीन भी करते हैं। लेकिन एक स्त्री दोबारा शादी करने का इच्छुक नहीं रखती है। तब कैसे रह पाती है? सिर्फ और सिर्फ अपनी सब्र गुण के वजह से।

जब हम देखेंगे तो ज्यादातर, पत्नियों से पहले, पति मर जाता है।

विधवा स्त्री ज्यादा दिखते हैं। विधवा पुरुष कम दिखते हैं, क्योंकि पुरुष लोग दोबारा शादी कर लेते हैं।

पतियां जल्दी क्यों मर जाते हैं? क्योंकि वह परिवार के लिए ज्यादा कष्ट करते हैं! बहुत सारे समस्याओं के दबाव में झेलना पड़ता है। सहज है की कमाना और परिवार का पोषण करना, पति का जिम्मेदारी है। ऐसे कुछ परेशानियां पत्नी के पास प्रस्ताव नहीं करता है और इनसे खुद ही सामना करता है और थक जाता है। इसलिए मैं समझता हूँ की पति लोग पहले ही निकल जाते हैं। जो दबाव पुरुषों में होता है स्त्रियों को नहीं होते हैं।

स्त्रियां जबरदस्ती अपने ऊपर लेते हैं, नहीं तो वैसे कम ही है। वह सब दबाव को अपना समझकर, परेशान रहती है। इसीलिए पति जब दूर होता है, पूरा परिवार का जिम्मेदारी उनको उठाना पड़ती है, सोचिए कितना सब्र गुण रहना चाहिए!

मानव लोग में तीन प्रकार के अग्नियां होते हैं। जठर अग्नि, काम अग्नि, और ज्ञान अग्नि। जब यह जठर अग्नी ज्यादा हो जाता है, अगर उनको शांत नहीं करते हैं, तब उनको सहनना कितना कष्ट होता है? उतना ही कष्ट है काम अग्नि। इच्छा बाहर दिखाई नहीं देता है। इसलिए सब्र रहना सामान्य विषय नहीं है।

आजकल विदेश में न केवल पुरुष लोग, स्त्रियों भी दोबारा शादी करने लगे हैं। लेकिन भारत में अभी कम है। सहज है कि भारत में हिंदुओं में पत्नियां दोबारा शादी नहीं करते हैं।

जब पति मर जाता है तब वह बेकार हो गई है करके, उनके चूड़ियां निकाल देते हैं और बिंदी निकाल देते हैं। सिर को मुण्डन कराकर, कहते हैं कि अब यही है आप का ज़िन्दगी! उनके मुश्किलों कोई परवाह नहीं करता और उनको हर जगह से बहिष्कार करते हैं। लेकिन आजकल बड़े लोगों को समझ आ रहा है, इनके भी दूसरे कि तरह इच्छाएं होते हैं, और धीरे धीरे बदलाव आ रहा है। मतलब हिन्दू धर्म में यह सब्र का गुण अच्छी तरह सीखते हैं।

गौतम बुद्ध ने 2500 साल पहले क्या किया है कि यह ज्ञान प्राप्त कर कर कई सारे देशों में जाकर वहां के लोगों को अपने मार्ग में लाया था। उस समय वह पैदल चलकर पूरा भारत में इस ज्ञान को बताया और यहां का हिंदू धर्म मिट गया और बौद्ध धर्म व्यापक हुआ।

तब जो भी हिन्दू धर्म में जो सीखना था, वह अवसर खो गया था। अगर हिन्दू धर्म ही नहीं है तब उसमें से सीखने वाले विषयों को कैसे सीखेंगे ? इसीलिए प्रकृति ने श्री आद्यशंकराचार्य जी को भूमि पर भेजा है।

उन्होंने काश्मीर से कन्याकुमारी तक पैदल यात्रा कर कर इस बौद्ध धर्म को मिटाकर दोबारा हिंदू धर्म को स्थापित किया है। उन्होंने ने आरामों को निकलवाया और मंदिरों को बनवाया है। इस प्रकार श्री आद्यशंकराचार्य ने फिर से हिंदू धर्म को खड़ा किया। सृष्टि करता ही यह सभी बदलाव करते हैं। क्यों कि ? इस लोक में हिंदू रहकर सीखने वाले विषयों भी है, इसलिए!

इसीलिए अगर हर एक को सब कुछ सीखना है तो, हर एक आत्मा हिंदू होकर भी सीखना है, और सब मजहबों मैं भी सीखना है, हर जाति में भी और हर प्रांत में भी सीखना है। इस तरह एक धनवान और गरीब होकर भी बहुत कुछ सीखना है।

पुराने दिनों में हिंदू आचारों में विधवाओं को संघ से बहिष्कार करते थे। आजकल यह सब बदल चुका है।

इसी तरह हजार या 2000 सालों के बाद कुछ और नया बदलाव आ सकता है। यह सारे बदलाव सृष्टि में सहज है।

जो कुछ भी हो सब्र रहना स्त्री जन्मों में अच्छी तरह सीखते हैं। यह विषय जान सकते हैं। इतना ही नहीं स्त्री जन्म में जब गर्भवती होती है, कितना सब्र रहना पड़ता है ? 9 महीने अपने पेट में भोज उठाकर प्रसव के समय में भी बहुत सब्र रहती है। शिशु का जन्म देना स्त्री का जिम्मेदारी है, पुरुष का नहीं है। वह कितना कष्ट होता है और तब वह सोचती है कि दोबारा कभी भी पुरुष के साथ संभोग नहीं करना है, लेकिन वह सोच तो सिर्फ कुछ ही दिनों तक रह जाता है।

इस समय स्त्री सब्र सीखती है। हर एक स्त्री अपने जीवन बहुत प्रकार के और बहुत विषयों में, और बहुत संदर्भों में सब्र रहना सीखती है। यह लक्षण एक ही जन्म में नहीं सीखते हैं। हर एक जन्म में थोड़ा-थोड़ा सीखते हैं। तब सब्र रहना सहज लक्षण बन जाती है।

इस सृष्टि में कुछ भी शाश्वत नहीं है। मतलब हमारे कष्टों या नष्टों, या रोगों या बीमारियों, या कुछ भी शाश्वत नहीं है। लेकिन सहज बात है कि जब कुछ कष्ट होती है, तब वह मंदिर या मस्जिद या चर्च को जाते हैं, और वहां के बाबा लोगों का पैर पढ़ते हैं। और ऐसे बहुत जगह घूमते हैं।

लेकिन थोड़ा सा अवगाहन होने वाले लोग सोचते हैं कि, यह कष्ट मुझे क्यों आया है ? या दिया है ? वह अपनी कर्मों के वजह से ही होता है। यह बात बड़ों ने कहा है और यह कैसे जाएगा ? मतलब यह कर्म अनुभव करने से जाएगा या थोड़ा सा सब्र रहने से धीरे-धीरे इससे बाहर निकल जाएंगे।

इस ध्यान मार्ग में आने वालों के लिए क्या लाभ है ? इस ध्यान करने से बहुत शक्ति प्राप्त करते हैं। तब बहुत कुछ सब्र कर सकते हैं। उस प्रकार उस समस्या से बाहर निकल सकते हैं।

पत्री जी के पास भी मैंने यह सब्र का गुण देखा हूँ। अपने ही शिष्यों में बहुत लोग उनसे विभेद करते थे। लेकिन वह किसी को कुछ नहीं कहता था। सबका विमर्श शांतिपूर्वक सब्र रखा और कई सालों से करते आया है।

अंत में जो भी उनसे विभेद किया था, वही लोग बाद में उनके पास वापस आए हैं। मैंने एक बार पत्री जी से कहा था कि, उन लोगों में बदलाव लाने के लिए, आपने बहुत सब्र दिखाया है। जबकि समस्या बडी होती है, वह सब्र रहते थे।

यह सब्र गुण की शक्ति, स्त्री जन्मों में बहुत ज्यादा होता है। और अच्छी तरह सीखते हैं। इसीलिए ऐसे जो सीखते हैं, आखिरी जन्मों में आने तक उनका प्रवर्तन भी पत्री जी जैसे हो जाते हैं।

एक संदर्भ में मैंने अपने ही मास्टर्स से थोड़ा कठिन व्यवहार करता था। यह बात पत्री जी के नजर में गया था। उस विषय को जानने के बाद पत्री

जी ने मुझे क्या कहा है ? कि आप तो ब्रह्मर्षि है। इसीलिए आपको थोड़ा सा सब्र रहना चाहिए। क्या मैं नहीं सब्र रहा हूँ ? ऐसे पूछा था ।

मतलब उसने कहा है कि हम सबको सब्र गुण जरूर रहना चाहिए।

यह गुण, सब्र रहना, स्त्री जन्मों में अच्छी तरह सीखते हैं। केवल एक ही जन्म में नहीं आएगा, ऐसे कई जन्मों में सीखने के बाद, उस लक्षण सहज हो जाता है।

(3) सहनशीलता ।

यह सहनशीलता सभी को बहुत आवश्यक है। यह सहनशीलता स्त्री जन्मों में सीखने वाला बहुत महान लक्षण है। यह स्त्री जन्म हर बार एक ही जाति में, मजहब में, प्रांत मे नहीं लेते हैं। दुनिया में जितने सारे तरह के जाति, मजहब, परिवार होते हैं, हर एक में स्त्री जन्म लेते हैं, लेना ही पड़ता है।

जब आप देखेंगे, बहुत परिवारों में पति लोग बहुत कठिन होते हैं। स्त्रियों पर बहुत प्रबंध होते हैं। पति हर वक्त अपने पत्नी के ऊपर अपना ही नियंत्रण में रखते हैं। वह कभी भी बाहर जाता है, बिना बता कर, लेकिन पत्नी पर बहुत रोक लगाते हैं। अगर पत्नी प्रतिकार करती है, तब वह उन्हें पीटता भी है।

पति इस तरह पत्नी को दबाव में रखता है। लेकिन जो भी हो, पत्नी सहनती है। वह कभी पति को छोड़कर नहीं जाती है। वही एक स्त्री का लक्षण है। बहुत जातियों में और मजहबों में एक स्त्री के ऊपर बहुत रोक लगाते हैं, और एक दासी के तरह देखते हैं।

फिर भी एक स्त्री सब कुछ सहनती है और अपने परिवार को आगे बढ़ाती है। इसीलिए यह एक स्त्री का सहज लक्षण हो गया है, तभी बहुत सारे परिवारों चल रहे हैं। लेकिन बहुत कम परिवारों में दोनों झगड़ा कर कर तलाक लेते हैं।

पुरुष का अहंकार सदियों से, युगों से चला आ रहा है। पुराने

जमाने में ज्यादातर पंडित और बड़ों पुरुष लोग ही थे। तब अपनी बुद्धि से क्या किया! उन स्त्रियों को 'पतिव्रता' का नाम पत्र डाल दिया है! इस नाम पत्र के वजह से उन पर बहुत सारे रोक लगाए हैं, और अपने बात को सही साबित करने के लिए पुराणों में पतिव्रता कथाएं भी लिखे हैं।

अपने पतियों के लिए बहुत सारे कष्टों और कठिनाइयों को सहन कर बहुत स्वच्छता के साथ अपना जीवन बिताते हैं। पति के अलावा किसी के ऊपर नजर भी नहीं रखते हैं। अगर किसी के ऊपर नजर रखी तो उनका पतिव्रता खो गया है, ऐसे बातें कथाएं में लिखे गए हैं। वह सब के समझ में शाश्वत हो गए हैं। और सभी स्त्रियां अपने आप को ऐसे ही रहना सहज हो गया है। ''सती को पति ही प्रत्यक्ष भगवान है'', का कहावत, मतलब एक पत्नी को अपना पति ही भगवान है, और कोई नहीं है, पुराणों में ऐसे लिखा गया था । यह बात लिखने वालों भी पुरुष लोग ही है।

लेकिन कहीं भी पति के लिए सती प्रत्यक्ष भगवान नहीं लिखा था। यह सारे कथाओं को पढ़कर स्त्री को ऐसे ही जीना है, का भाव हो गया है। हमें एक ही विषय याद रखना है। यह सारे नियमों के वजह से स्त्री जन्मों में सहनशीलता का लक्षण एक आत्मा सीखती है। यह सभी प्रकृति का नियम में ही होते हैं ।

इसलिए युगों से ही स्त्रियों को पति के बराबर हक नहीं मिले थे। एक स्त्री, घर में खाना बनाना तक सीमित रह गई है। अगर हम देखेंगे तो इस्लाम मजहब में स्त्रियों को कुछ भी हक नहीं रहते हैं। उनको असलियत में बाहर भी नहीं आने देते हैं। अगर आया भी, तब उनको बुर्का पहनना पड़ता है।

लेकिन एक पुरुष को कुछ भी नियम नहीं है। उस मजहब में एक पुरुष को जितना भी स्त्रियों से शादी कर सकते हैं। वही हक पत्नी को नहीं है। अगर उनका कोई पत्नी अच्छा नहीं लगता है तो, तीन बार तलाक कहकर उनसे संबंध और रिश्ते तोड़ सकते हैं। इतना ही नहीं, स्त्रियों को मस्जिद में जाना मना है। पुण्य तीर्थों में जाना मना है। मक्का जाना मना है। एक प्रकार

से सिर्फ वह पुरुष लोगों के लिए ही जीना जैसा है।

इस्लाम मजहब में स्त्रियों को ऐसे रहते हैं जैसे बच्चों पैदा करने का यंत्र जैसे। यह सभी उनको सहनशीलता सीखने के लिए, उस मजहब में यह नियमो बनाए हैं। एक प्रकार से अगर कहेंगे तो इस्लाम मजहब में स्त्रियां बहुत सहनशीलता सीखती है। वहां पर पुरुष लोगों को, स्त्री जैसे सहनशीलता सीखने के लिए, अगले जन्म में स्त्रियां होकर पैदा हो सकते हैं। अभी उनको यह विषय मालूम नहीं है, क्योंकि वह समझते हैं कि अगला जन्म कुछ नहीं है।

इसी प्रकार अगर एक आत्मा को पूर्ण आत्मा बनना है, तब किसी न किसी एक मज़हब में जन्म लेते हैं। और हर प्रकार के मज़हब में भी जन्म लेते हैं। इसीलिए पृथ्वी पर इतने सारे प्रकार के मज़हबों हैं। अगर कोई भी अपने आप को एक प्रकार मज़हब का ही है का भावना रखता है, मतलब वह अभी भी अज्ञानता में है। जब तक वह उस भाव में नहीं आता है कि सब कुछ एक ही है, समझो तब तक उसका ज्ञान नहीं है ।

यहां पर हिंदू मज़हब में जो होता है, इस्लाम मज़हब वालों को द्वेष करता है, और यही अगला जन्म में एक मुस्लिम मज़हब में जन्म लेकर हिंदुओं को द्वेष करता है। यहां पर हिंदू मज़हब में हिंदू जैसा लड़ता है, मुस्लिम मज़हब में बाद में जन्म लेकर हिंदुओं के ऊपर लड़ता है। यह सृष्टि में यह बहुत विचित्र की बात है।

जो भी बाहर दिखता है और चलता है यह सब वास्तविकता नहीं है। यह सब माया है। माया मतलब वास्तविक जैसा दिखता है, लेकिन अंत में नहीं रहता है। अभी सब कुछ हो रहा है का भाव रहता है, रहने जैसे लगता है, लेकिन कुछ भी नहीं रहेगा।

जैसे कि एक सिनेमा में एक आदमी महाराज का वेश धारण लेता है। सच्ची में वह राजा थोड़ी बन जाता है क्या? अगर एक मिनिस्टर का वेश धारण लेता है, वह मिनिस्टर नहीं बन जाता है। यह सभी है जब तक सिनेमा रहेगा। हमारा जीवन भी इस सिनेमा जैसा ही है। अगर यह सिनेमा एक

डायरेक्टर चलाता है, इस जगत का सिनेमा नाटक को उस सृष्टि करता चलाता है। बस फर्क इतना ही है। अगर यह ज्ञान रहता है कि, मैं इस नाटक में एक पात्र निभा रहा हूँ, तब किसी के ऊपर हमें ना क्रोध होगा, ना असूय होगा, ना किसी पर द्वेष रहेगा, विमर्श नहीं करेंगे और किसी को भी किसी के बारे में निर्णय नहीं करते हैं। यह विषय नहीं जानने की वजह से ही यह सभी कर्मों हम कर रहे हैं।

आजकल भारत देश में भी बहुत लोग दुखी रहते हैं। कहते हैं कि हिंदू मजहब के लोग दूसरे मजहब में चले जा रहे हैं। विचित्र की बात यह है कि कभी भी इस सृष्टि में कोई भी चीज पूरी तरह से नहीं चले जाते हैं। हर वक्त हर चीज रहता ही है।

कुछ देशों में, मतलब रूस जैसे, या इस्लाम देश में भी कुछ लोग हिंदू मजहब का व्यापक हो रहा है। कहां क्या रहना है, कहां क्या नहीं रहना है, यह सब सृष्टि करता का निर्णय के प्रकार होता है। अगर सृष्टि ऐसे रहना है, तब ऐसे सारे रहेंगे। इसलिए हम कौन होते हैं ? हमें क्या कहना है, क्या करना है, हम कौन हैं ? हमें क्या करना है ? हमें क्या हासिल करना है ? इन सारे प्रश्नों पर दृष्टि रखना चाहिए।

और सब दूसरे चीजों के बारे में सृष्टि करता खुद ही देख लेगा। हमारे हर बात, हर वक्त हमें कैसे पूर्ण आत्मा बनना है ? का विषय पर ही दृष्टि रखना चाहिए। इसीलिए मानव को यह लक्षणों स्त्री जन्मों में कुछ, और पुरुष जन्मों में कुछ, लेकर परिपूर्ण होता है। और अंत में पूर्ण आत्मा बन सकता है।

(4) त्याग ।

स्त्री जन्मों में सीखने वाले एक और मुख्य लक्षण है, ''त्याग''। त्याग मतलब लगभग सब कुछ छोड़ते रहते हैं। अपने पति के लिए, परिवार के लिए, बच्चों के लिए, एक स्त्री अपने अंदर जो भी चाहते हैं, या खुशियां है, उन सब कुछ त्याग करती है।

अगर आप देखेंगे, कोई भी पत्नी सिर्फ अपने पति और बच्चों के खाने के बाद ही खाती है। खाना भी वही पकाती है, लेकिन उन सब के खाने के बाद ही खुद खाती है। और जो कुछ बचा है, उसको खाकर वह संतुष्ट रहती है। यह नहीं सोचती है कि, वह मैंने बहुत प्यार से बनाया है, वह मेरे लिए कुछ नहीं छोड़ा है। ऐसे ही अपने पति और बच्चों खाने से, उनका पेट भी भर जाता है।

अगर वह खाना बहुत स्वादिष्ट लगता है, तो वह लोग पूरे खा लेते हैं। और कभी–कभी उनको कुछ भी नहीं बचता है। तब भी वह कभी भी असंतुष्टि नहीं दिखती है। उतना महान त्याग गुण एक स्त्री का होता है। क्यों कि वह समझती है कि, खुद खाने से अच्छा अपने पति और बच्चों खाने से ही उनके संतुष्टि का भाव रखती है। ऐसे अपने जीवन में कई सारे विषयों में अपने पति और बच्चों के लिए त्याग करती है।

एक स्त्री को भी एक पुरुष जैसे ही बहुत सारी इच्छाएं, आशाएं, खुशियां रहते हैं। लेकिन अपने परिवार के लिए वह सब कुछ त्याग करती है। उतना ही नहीं, अपने बच्चों जब बढ़ते रहते हैं और छोटे हैं उस समय अपना नींद भी त्याग करती है। अपना सुख भी त्याग करती है। अपने जीवन में ऐसे कई जन्मों में त्याग कर कर, एक त्याग गुण उस स्त्री में सहज गुण हो जाती है।

हम सब आत्माएं हैं, का विषय जान लिए हैं। और यह भी जाना है कि हम जो आत्माएं हैं, उनका पूर्ण आत्मा बनने का ही हमारे लक्ष्य है को समझ चुके हैं। 350 जन्मों पार करने वाले ही लोग अपने लक्ष्य साधना के लिए, अपने बढ़ोतरी के लिए, अभी बहुत त्याग करते हैं। अपने रुचि को छोड़ते हैं, अपने इच्छाओं को, खुशियों को, रिश्तों को, सिनेमा को, सीरियल और ऐसे बहुत कुछ त्याग करते हैं। यह सभी अपने पूर्व जन्मों में त्याग का गुण सीख लिए हैं। लेकिन जो प्रारंभ जन्मों में है, उन लोगों त्याग नहीं कर पाते हैं।

श्री रमण महर्षि अपने जीवन में बहुत कुछ त्याग किया है। जो भी रहता था उसे खाकर पेट भरता था। उसने बहुत महंगा खाना कभी नहीं आशा

किया है, इच्छुक नहीं रखा है। अपनी साधना के लिए शरीर को खड़ा करने केलिए खाया, और इस शरीर से अपना लक्ष्य प्राप्त करने केलिए जरूरी कर्मों करना चाहा और कुछ नहीं देखा है।

हम सभी इस स्थिति में हैं। उस त्याग गुण हम सब में बहुत कुछ है। देखिए हम कितने छोड़ दिए हैं। जो है उससे ही चल रहे हैं। सब की तरह रहने का, सब की तरह जीने का, नहीं सोचते हैं। जो कुछ है उनसे संतुष्टि से जी रहे हैं और बाकी कुछ त्याग कर रहे हैं।

हमने कई जन्मों में यह त्याग का गुण सीख चुके हैं। इसीलिए वह अभी हमारे लक्ष्य साधना में उपयोग हो रहा है। बताइए कौन छोड़ सकते हैं यह सभी ? कोई मांस खाना छोड़ सकता है ? कोई भी नहीं ! वह बोलेंगे कि अगर छोड़ना है, आपको छोड़ दीजिए ! और हम किस लिए जी रहे हैं ? अगर नहीं खाएंगे तो जीना किस लिए ? ऐसे कहते हैं कुछ लोग।

हम तो दाल चावल खाने से उन लोगों को मिर्ची लगती है। अगर इतना सा त्याग गुण नहीं रहेंगी, मानव को अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पाता है। आत्मा को जानने के लिए, आत्मा को अनुभव में लाने के लिए, यह सभी त्याग करते रहना है। और इन सारे विषयों पर विरक्ति होगा। ना भोगों पर, ना सुखों पर, यह सभी छोड़ने का ही त्याग कहते हैं। इसीलिए कहते हैं कि ''आत्मा पर आसक्ति और विषयों पर विरक्ति होना चाहिए'' ।

पत्री जी से परिचय होने से पहले, मेरा जीवन एक प्रकार का था और उनके परिचय के बाद, मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गई है। इससे पहले मैं सिर्फ कमाना, खुशियों मनाना, भोग करना, यह सभी महान समझता था। अभी यह सभी को छोड़ दिया हूँ। तो मैं इन सबको त्याग कैसे कर पाया हूँ ? मतलब पूर्व जन्मों में उस लक्षण मैंने पाया है। जितना ज्यादा उस लक्षण आप में रहेगा, उतना ही आध्यात्मिकता में आप बढ़ेंगे और जितना बढ़ेंगे तब दुख से उतना दूर रहेंगे।

हमने बहुत सारे स्त्री जन्मों लेकर इस त्याग गुण का लक्षण प्राप्त किए हैं। आखिर में ध्यान में आने के बाद भी, पत्नी लोग अपने पति के बारे

में सोचते हैं कि, कम से कम वह ध्यान तो करें। मैं आपको कहता रहता हूँ कि आपका पति का आत्मा स्थिति अलग है, और आपका आत्मा स्थिति अलग है। अपना साधना खुद देखो और उसका क्यों देखना है ? तब भी पत्नी को संतुष्टि नहीं रहती है। वह समझती है कि अगर पति भी करें तो अच्छा रहेगा। इस प्रकार अपना दृष्टि पति पर रखकर अपना साधना को भी त्याग करती है।

इसी प्रकार कुछ स्त्रियां चाहते हैं कि अपने बच्चों भी ध्यान करें । यह लोग बुढ़ापे में ध्यान में आए हैं और उनको कहते हैं की बचपन से ही करना है। उनसे करवाने के लिए यह लोग बहुत कष्ट करते हैं। पत्री जी कहते हैं कि जब उनका वक्त आएगा, वह लोग खुद ही आएंगे। उनका क्या करना है बस आप करते रहिए।

हम सब आत्माएं हैं। अपने–अपने प्रणालिका के साथ आए हैं। उस प्रणालिका के प्रकार जो जीते हैं वही सही जिया है। अगर उस प्रणालिका के विरुद्ध जिए हैं, अपना जीवन को नष्ट किया है। इसीलिए उस परिवार के लिए, उन बच्चों के लिए, अपने पति के लिए, त्याग मत करना । बस कहना है कि यह सही मार्ग है। और कुछ यह काम नहीं करना है, वह धर्म है, मांस नहीं खाना है, ऐसे विषयों कह सकते हैं। अगर नहीं माने तो आपको दुखी नहीं रहना है।

इस त्याग लक्षण के वजह से, अपनी बढ़ोत्तरी में रुकावट लाती है। उनको मालूम है क्या करना है ? कैसे जीना है ? फिर भी वह सब छोड़ देती है! यह मूर्खतापन है। परिवार में बच्चों, माता–पिता, पति, अपने–अपने आत्मा स्थितियों में रहते हैं।

अगर आपको समझ आता है कि, सब आत्माएं हैं, तब यह विषय भी आपको समझ आ जाता है कि वह लोग अपने अनुभवों के लिए आए हैं। और उनके प्रकार ही जीते हैं। जितना भी कहो उनको समझ नहीं आता है और वही काम करते रहेंगे। तब आप क्या करेंगे ? जैसे आप चाहेंगे वह कैसे जिएंगे ? जैसे आप चाहेंगे आप खुद रहिए, वह काफी है । तब आप अपने

प्रणालिका के प्रकार जीते हैं।

आप एक ही याद रखिएगा कि हर एक शरीर में आत्मा रहती है। और आत्मा ऊपर लोकों में निर्णय करने वाला प्रणालिका को, भूमि पर जाकर भूल जाती है।

लेकिन वहा के निर्णय के विरुद्ध अगर यहां काम करते हैं, तब उनके आत्मा घोषित करता रहता है। अगर आप ऊपर निर्णय करने वाला प्रणालिका के हिसाब से चलते हैं, आत्मा बहुत संतुष्ट हो जाती है और आनंद रहती है।

सहज बात है कि स्त्रियां सारे घर का काम करते हैं। पति को और बच्चों को खाना पकाते हैं। वह खुद भी कहते हैं हर रोज यही काम है। कभी-कभी वह सोचते हैं कि, क्या यह मेरा जीवन इतना ही है? इसी के लिए मैं जन्म लिया हूँ क्या? अंदर से उनको लगता है। तब यह बात कौन बता रहे हैं? अंदर जो आत्मा है, वह याद दिला रहे हैं! आप उस काम करने के लिए जन्म नहीं लिए हैं! आपको और कुछ भी है करने को। आप वह नहीं कर रहे हैं का विषय बताते हैं। ऐसे लोगों को जब यह ध्यान करते हैं, पुस्तक पढ़ते हैं, यह ध्यान क्लास में जाते हैं, अंदर से अपने आप को बहुत आनंद महसूस करते हैं।

अगर चाहिए तो आप देखिए, अगर आप किसी कारण से भीमावरम क्लास नहीं आते हैं या तो ज़ूम क्लास नहीं आते हैं तो, अंदर से आत्मा घोषित करता है। तब जब आप दोबारा आ जाते हैं तब अंदर से वह घोष नहीं होता है।

इसी प्रकार एक पुरुष सुबह से लेकर कष्ट कर कर पैसा कमाकर अपने परिवार को देखभाल करता है। हर रोज वही काम करता रहता है। तब कभी जिंदगी में अंदर से पूछती है । क्या यही है मेरा जिंदगी? ऐसे लोग जब ध्यान में आते हैं तब अंदर से उनको बहुत संतुष्टि रहती है और अनंत आनंद का अनुभूति पाते हैं।

मैंने ध्यान में आने से पहले कई दान कार्यक्रम करते थे, और सेवा कार्यक्रमों करते थे। इस प्रकार एक उचित होम्योपैथी अस्पताल रहता था, और जैसे पानी का कूलर रखता था। मेरी मैडम स्त्रियों के लिए एक मुफ्त

कोचिंग सेंटर रखी थी। फिर भी अंदर से वह संतुष्टि नहीं रहती थी। और कुछ करने का अंदर से लगता था।

लेकिन पत्री जी का परिचय के बाद इस मार्ग में आकर, इस ध्यान कर कर, यह ज्ञान सबको बताते वक्त बहुत संतुष्टि लगती है। इससे पहले जितने भी सेवाएं किए हैं, लेकिन संतुष्टि नहीं रहता था। तब मुझे लगा कि यही काम करने के लिए मैं आया हूँ। आखिर में यह ज्ञान प्रचार करते वक्त भी अगर चार–पांच दिन घर में रह जाता हूँ तो, मुझे अच्छा नहीं लगता,अंदर से कुछ कमी लगता है।

बहुत लोग पूछते हैं कि, क्यों इतना कष्ट कर रहे हो ? आराम से घर में आराम कर सकते हैं ! मैं तो आराम से रह सकता हूँ, लेकिन अंदर से आत्मा नहीं रहने देती है ! उस घोषा को अगर आपको समझ आता है, आप भी बैठ नहीं पाते हैं। आप भी आखरी जन्मों में हैं। अगर आप अपनी समय को वृदा करते हैं, तब अपना जीवन को नष्ट कर रहे हैं। इसीलिए जब भी अवसर मिल जाता है, पूरी तरह से उपयोग कीजिएगा।

मनस और आत्मा के बीच में संघर्ष होता रहता है। मनस कहता है सुखी रहने का, आत्मा कहता है कष्ट करने का और हासिल करने का। और समय को बर्बाद नहीं करने का। अपना जीवन को बर्बाद नहीं करने को कहता है।

अगर इस प्रकार जीना है, जीवन में कुछ त्याग करना है। अगर ऐसे त्याग करेंगे अपना लक्ष्य को आराम से हासिल करेंगे।

(5) पवित्रता ।

स्त्री जन्मों में पवित्रता का लक्षण सीखते हैं। एक स्त्री सहज में पवित्रता से जीती है, और पवित्रता से जीने का इच्छुक रखती है, और प्रयत्न करती है। पति के साथ भी पवित्र ही रहती है। ऐसे पवित्रता के साथ जीने वाला स्त्री को पतिव्रता कहते हैं। यह एक स्त्री का लक्षण है।

सहज बात है कि स्त्रियों को दैव भक्ति ज्यादा रहती है। देवताओं

को पूजा करते हैं, आराधना करते हैं, और इन विषयों में बहुत पवित्रता से करते हैं। मंदिरों जाते हैं, स्नान करके अच्छे कपड़े पहन कर, अपना चप्पल को बाहर छोड़कर, जब भी कुछ भी काम पवित्रता से करते हैं, उनका अच्छा ही फल मिलता है। भक्ति विषयों में स्त्रियों को पवित्रता पर बहुत आसक्ति दिखाते हैं।

आखिर में इस ध्यान मार्ग में भी ज्यादातर लोग स्त्रियां ही हैं। ध्यान का मतलब सिर्फ अपने आंखों को बंद कर कर बैठना नहीं। ध्यान का मतलब सत्यमय भगवान, परमात्मा और परम ब्रह्म का आश्रय करना ही आराधना है। इसी मार्ग में पत्री जी ने हमें दिया है "श्वास पर ध्यास" ध्यान मार्ग। सिर्फ और सिर्फ इस "श्वास पर ध्यास" ध्यान द्वारा ही भगवान को आश्रय कर सकते हैं।

लेकिन आजकल बहुत लोग गाइडिंग और म्यूजिक रखकर मनस के पास ही रुक जाते हैं। मनस को नहीं पार कर कर, और आत्मा के पास नहीं जा पा रहे हैं। अगर मनस के पास रुक जाते हैं, उसको जप कहते हैं। जब मनस को पार करते हैं तभी ध्यान कहलाता है।

जब यह ध्यान करते हैं, पवित्रता से करना है। इसीलिए हम सब लोग जूम क्लास में सुबह स्नान करके ही बैठते हैं, क्योंकि भगवान को आश्रय करते हैं। इसीलिए पवित्रता रहना चाहिए। जब मंदिर को जाते हैं, एक मूर्ति को आश्रय करने के लिए, पवित्रता से जाते हैं। लेकिन साक्षात परमात्मा को आश्रय करने के लिए पवित्र रहना है या नहीं ? इसीलिए स्नान करके ही बैठते हैं।

उतना ही नहीं, जब आप पूजा करते हैं उस बाहरी अलंकार ही नहीं, मनस को भी उस देव पर केंद्रीकरण करना चाहिए। ऐसे कहते हैं बड़ों ने। लेकिन आप आंखें बंद कर कर उस देव पर दृष्टि नहीं रख कर, अपने समस्याओं पर, अपनी इच्छाओं पर, अपनी परिवार पर, दृष्टि रख रहे हैं। अगर आप आंखें बंद कर कर इन सारे चीजों पर दृष्टि रखते हैं तो, आपने देव के ऊपर दृष्टि रखा है क्या ? देव को आश्रय कैसे हुआ है ?

इसी प्रकार जब ध्यान करते हैं, किसी चीज के ऊपर दृष्टि नहीं

रखना है, सिर्फ आत्मा के ऊपर ही दृष्टि रखना है। वही असली भक्ति है।

तभी आपको फल मिलता है। लेकिन सिर्फ ऐसे ही बैठकर, फल कैसे आएंगे ? जब आपका मनस किसी दूसरे विषयों पर जाती है, तब उसको रोक कर आत्मा के ऊपर रखने के लिए, कुछ दिनों के लिए कष्ट करना है ! तभी आप हासिल कर सकते हैं। उस प्रकार, पवित्रता से ध्यान में बहुत अच्छे फल आप पा सकते हैं और ध्यान में आपका पवित्रता बढ़ती रहती है।

यह मार्ग मिलना और यह साधना करना बहुत भाग्यवान है, क्योंकि ध्यान में उस परमात्मा के साथ घंटे तक आप रह जाते हैं। इसीलिए ध्यान करने वालों बहुत कुछ पा सकते हैं और बहुत महान स्थिति तक पहुंच सकते हैं।

यह प्रापंचिकता का कुछ भी रुकावटें नहीं रहने के लिए, कुछ लोग हिमालय पर्वतों में, और आश्रमों में और आरण्यों में चले जाते हैं। वहां पर गुफा में एक ही रहकर साधना करते हैं। ऐसे लोग महान योगी बने हैं और सब कुछ हासिल किए हैं।

हम लोग उतना नहीं होंगे, लेकिन अपने काम करते-करते परिवार को देखभाल करते करते, अपने भुक्ति के लिए देखकर, जब भी खाली समय मिलता है, अगर यह ध्यान करते रहेंगे, तब अपना काम भी अनुकूल रहेंगे।

हर वक्त हमें उस भगवान को पहुंचना है, उनके साथ रहना है, उनका साक्षात्कार करना है, सिर्फ यही उद्देश्य रखकर, और दूसरा कुछ नहीं है, तब बताइए हमें क्या कमी रहेगी ? क्या कठिनाई आएंगे ? अगर कुछ भी हो, अगर पहले किए हुए कर्मों द्वारा ही आएंगे, और वह भी निकल जाएंगे। उनके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है।

हम सब लोग महान मार्ग में आए हैं। ऐसे करने से हमारा बुद्धि अच्छा विकसित होकर, कई जन्मों में सीखने वाले विषयों को, इसी जन्म में सीख लेते हैं।

मैं यकीनन कह सकता हूं। अगर इसी तरह हम तीव्रता से ध्यान करेंगे, भगवान के ऊपर दृष्टि रखकर, भीमावरम क्लास में आते रहेंगे, और जहां भी हो, क्लास में भाग लेंगे, सुबह के ज़ूम क्लास में भाग लेंगे, अगर

अपना समय को बर्बाद नहीं कर कर, अश्रद्धा नहीं कर कर रहेंगे, तो , कई जन्मों में जो सीखने वाले विषयों को यकीनन इसी जन्म में सीख सकते हैं। बहुत आगे बढ़ोतरी होंगे। आत्मा का उन्नति प्राप्त कर सकते हैं, और आत्मा के लिए बहुत लाभ मिल सकते हैं।

इसीलिए यह पवित्रता, स्त्री जन्मों में अच्छी तरह सीखते हैं। इन लक्षणों जितना ज्यादा सीखते हैं, उतना ज्यादा बढ़ोतरी किए हैं।

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

''पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।''

हमने स्त्री जन्मों में सीखने वाले कुछ मुख्य लक्षणों जान चुके हैं। अब हम पुरुष जन्मों में सीखने वाले कुछ मुख्य लक्षण जान लेते हैं। पुरुष जन्मों में मुख्यतः धैर्य, वीरता, निर्भयता, साहस और नेतृत्व (पहल) का लक्षण सीखते हैं।

यह सारी लक्षणों किस लिए सीखना चाहिए? आत्माएं जो हम है, हम अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए। बहुत लोग अपनी ध्यान रोगों के लिए, इच्छाओं के लिए, या तो अनुभव पाने के लिए, या तो कुछ लाभ पाने के लिए करते रहते हैं।

लेकिन हम सब लोग उस स्थाई पार कर चुके हैं। आखिरी जन्मों में आ चुके हैं। हमारा आशा अलग है, हमारे लक्ष्य अलग है। अगर आप अपने जीवन में आस पड़ोस के लोगों को देखते हैं, 300 - 350 जन्मों तक, सब का लक्ष्य अलग-अलग रहते हैं।

बचपन से जो गाने गाते हैं, अगर स्त्रियां हैं तो कभी ना कभी सुशीला के स्थाई को पाने के लिए, अगर पुरुषों है तो घंटासाला या तो एसपी बालासुब्रमण्यम का स्थाई को पहुंचने के लिए, सोचते हैं। अगर उस स्थाई तक पहुंच जाते हैं, तब वह समझते हैं कि अपना लक्ष्य को हासिल कर चुके हैं।

इसी प्रकार एक लड़का एक अच्छा सा क्रिकेटर बनना चाहता है। और दूसरा कोई फुटबॉल प्लेयर बनना चाहता है। और दूसरा किसी और खेल में रिकॉर्ड बनाना चाहता है, और कहता है कि वही मेरा लक्ष्य है।

कुछ लोग सबसे ज्यादा पैसे कमाने का, और पूरा जीवन उसी में लगे रहते हैं और उसी के लिए कष्ट करते हैं और कहते हैं कि वही अपना जीवन का लक्ष्य है। और कुछ लोग मैं सैकड़ो लोगों को काम दिलाना चाहता हूँ और यही मेरा लक्ष्य है। और कहता है कि तभी मुझे संतुष्टि मिलेगा। और कुछ लोग एमएलए या तो मिनिस्ट्टर बनने का इच्छुक रखते हैं।

अगर देखेंगे तो ऐसे एक-एक का अपना लक्ष्य रहता है। ऐसे लक्ष्य 350 जन्मों तक रहता है। बाद में उनको समझ आता है कि मैं यह शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। तब तक तो वह शरीर समझ के रहे थे, उस भाव में रहे थे।

अगर जब तक उस भाव में रहते हैं, अपना लक्ष्य अलग-अलग रहता है। लेकिन जब आत्मा का भाव में आ जाते हैं, उनका लक्ष्य बदल जाता है। आत्मा का लक्ष्य सिर्फ पूर्ण आत्मा बनना है। इसीलिए वह हासिल करने के लिए पूर्ण ज्ञानी बनना चाहिए। इस ज्ञान पाने के लिए ही हम सब ध्यान कर रहे हैं।

इसीलिए मैं हर एक को कहता हूँ कि भीमावरम क्लास को छोड़ना नहीं है। आप जो आत्माएं हैं, अगर आप अपना लक्ष्य को हासिल करना है, तब जरूर भीमावरम आना ही चाहिए। ध्यान करने के लिए हिमालयों जाकर वहां बहुत कष्ट करने वाले बहुत लोग हैं। हिमालय में ध्यान करना मामूली विषय नहीं है। उनका जीवन वही खत्म हो जाती है। हम सब उतना नहीं होंगे। लेकिन कम से कम थोड़ा सा तो करना है। जैसे अचार्य नागार्जुन ने कहा है कि संसार में ही निर्वाण प्राप्त करना है, वही पत्री जी ने भी कहा है। वही काम हम सब अभी कर रहे हैं।

अगर अपने जीवन में सही रास्ते में जाना है, तब आपको ज़रूर , मैं आत्मा हूँ , का निर्धारण करना चाहिए। जो भी इसको निर्धारण करते हैं, वह किसी दूसरी चीज पर दृष्टि नहीं रखते हैं। संसार में रहते हैं लेकिन अपना लक्ष्य को नहीं छोड़ते हैं।

महान महान साधकों और योगियों को और महर्षियों को, उनके परिवार नहीं था क्या ? आध्यात्मिकता के लिए परिवार कोई रुकावट नहीं है। सुखों भी कुछ रुकावटें नहीं है। जितने हैं उसी में सुखी रहने को कहते हैं पत्रीजी। इसीलिए संसार में रहते ही अपना समय को बर्बाद नहीं कर कर, अपना लक्ष्य साधना के लिए प्रयत्न करना चाहिए। आप साधना करते ही इस मार्ग में सेवाएं भी करने का प्रयत्न करना चाहिए। पुरुष जन्मों में सीखने वाला लक्षण, 'धैर्य' के बारे में अभी जानते हैं।

(1) धैर्य ।

सहज में एक पुरुष ही धैर्य प्रदर्शन करता है। किसी भी विषय में, या काम में, धैर्य के साथ आगे बढ़ता है। रात के समय में भी, या अकेले रहते वक्त, या किसी भी झगड़े में, एक पुरुष ही आगे रहता है, धैर्य के साथ।

जब देखते हैं, पुराने जमाने में, युद्ध में, सिर्फ पुरुषों ही रहते थे। कारण यह है कि वह पुरुष का लक्षण है। पुरुष को ही उस शक्ति और बल और शरीर का समरुपता दिया गया है। स्त्री को संवेदनशील और कोमलता के तत्व दिया गया है।

जब देखते हैं, एक उम्र के लड़का और लड़की युवावस्था में पहुंचने तक दोनों एक समान दिखते हैं। लेकिन जब लड़की कौमार्य बन जाती है, कोमलता बन जाती है। अपने शारीरिक व्यवस्था में कई तरह के बदलाव दिखते हैं। इसी प्रकार पुरुषों में भी उन पुरुष के लक्षण बढ़ते रहेंगे। यह सृष्टि का नियम है।

अगर हम देखते हैं तो, एक परिवार में जबकि माता एक स्त्री होती है, फिर भी अपने लड़कों को प्रोत्साहन करती है और लड़कियों को निबंध करती है। और कहती है आप तो लड़की है क्यों सब के लिए आगे निकल जाती है। लड़की है तो लड़की जैसी रहना है। यह झगड़ा वगैरा आपको किस लिए ? हर बात पर आप बाहर निकल जाते हो, करके एक मां अपनी लड़की को भयग्रस्त बनाती है, डरपोक बनाती है।

लड़के लोगों को उन नियमों निबंध नहीं रहते हैं । बचपन से ही वह धैर्य का गुण प्रोत्साहन करते हैं, और इसीलिए पुरुष धैर्य को प्रदर्शन करता है। युद्ध जाने से पहले पुरुष को स्त्री एक वीर तिलक लगाकर प्रोत्साहन करके भेजती है। ऐसे युद्धों आजकल नहीं होते हैं, लेकिन झगड़ा करते रहते हैं। तब घर के अंदर स्त्री क्या कहती है ? हमारे ऊपर कुछ लोग आक्रमण करते हैं, और आप जाकर उसको देखना है। ऐसे करके प्रोत्साहन करती है। इतना ही नहीं है, अगर देखेंगे तो रात में अगर कोई चोर घर में घुसते हैं, और कुछ शब्द सुनाई देते हैं, तब लड़कों को ही पहले बेजते हैं, कि वहां दरवाजे खोलकर

देखने के लिए। तब पुरुष धैर्य से उठकर चलता है । ऐसे बहुत सारे विषयों में पुरुष अपना धैर्य का प्रदर्शन करता है।

अगर कोई भी कहेगा कि यह झगड़ा क्यों करना है, तब उसमें थोड़ा सा भय का गुण है। जब कोई चोर घर में घुसते हैं, कुछ लोग ओढ़कर सो जाते हैं। तब स्त्री कहती है आप पुरुष नहीं है क्या? मर्द नहीं है? और कुछ मर्दानगी नहीं है क्या आपके अंदर ? कहकर धैर्य जगाती है। कुछ लोग पुरुषों ऐसे भयभीत रहने के कारण, वह अपने प्रारंभ जन्मों में है। थोड़ा बहुत सीखे हैं, लेकिन धैर्य का लक्षण अभी सीखा नहीं है। वह ऐसे कुछ जन्मों बाद धैर्य सहज लक्षण बन जाती है। इसीलिए प्रारंभ जन्मों में एक स्त्री, पुरुष को धैर्य बताना पड़ता है। अगर स्त्री ऐसे धैर्य बता रही है, मतलब उस स्त्री इससे पहले जन्म में एक पुरुष रहकर धैर्य को सीखी है, और अभी स्त्री का जन्म लिए है। इसीलिए धैर्य से कह सकती है। अगर दोनों को धैर्य नहीं है, तब दोनों अपने दरवाजे बंद कर कर डर से कांपने लगते हैं।

इसलिए इस धैर्य प्रदर्शन करने कि शक्ति, और बल , सहज में पुरुष को ही दिया गया है। प्रारंभ जन्मों में पुरुष धैर्य नहीं दिखा पाता है, लेकिन दूसरों को देख कर जल्दी सीखता है। और धैर्य प्रदर्शन करता है। अंत में उतना प्रदर्शन करता है कि, वह मरने तक तैयार हो जाता है।

इसीलिए जो धैर्य प्रदर्शन करता है वही नायक है, और राजा बनता है। वह धैर्य प्रदर्शन करता है और साथ-साथ सबको अपनी बातों से उत्साहित कर कर, धैर्य प्रदर्शन करवाता है। और सबको अपने नेतृत्व में चला सकता है। अगर देखेंगे तो कोई भी विषय में कितने लोग हैं का बात नहीं है, लेकिन कितना धैर्य प्रदर्शन कर सकते हैं, उसी के ऊपर ही अपना विजय आधार होता है।

देखिए जानवरों में अत्यंत धैर्य शक्ति जानवर सिंह है। वह कोई भी, जितना भी बड़ा जानवर से भी धैर्य से टक्कर लेती है। वह हाथी भी हो, या ऊंट से भी सही, या जिराफ भी सही, या तो गैंडा से भी, या तो मगरमच्छ से भी, या कोई भी बड़ा जानवर से भी, वह पीछे नहीं हटती है। और बिना संशय,

उस पर चढ़ जाती है, और मारने का प्रयत्न करती है।

इसीलिए हम सिनेमा में और यूट्यूब में देखते रहते हैं, सैकडों गायों, या बक्रियां या हिरण, वहा खेतों में अपना घास खाते रहते है और अगर अचानक एक सिंह दिकता है, तब एक दम भाग जाते है, क्योंकि वह खाते वक्त एक तरफ से भय से आवाज़ों को सुनते रहते हैं। एक छोटा सा भी शब्द से ही, वह भागने के तैयार हो जाते हैं। भय उनके लक्षण है। उन जानवरों को धैर्य परिणाम क्रमण में आती है। बाद के जन्मों में वहां पर सीखने वाले विषयों वहां सीखते हैं। ऐसे धैर्य दिखाने वाले एक सिंह, एक सैकड़ो जानवरों को भगाने को मजबूर करती है।

उनका गर्जन से ही जंगल को हिला देती है। और सारे जानवरों इधर–उधर भाग जाते हैं। अगर गर्जन से ही उनके स्थिति ऐसा है, सोच लो अगर एक सिंह दिख जाती है, उनका स्थिति कैसे रहेगा।

300 जन्मों लेने के बाद अगर एक स्त्री को देखते हैं, उनमें पुरुष का लक्षणों दिखाते रहते हैं। उनका बोल, उनका हाल–चाल, उनका चाल, सब पुरुष जैसे प्रवर्तन करती है। इसका कारण यही है कि, पिछले जन्म में पुरुष जन्मों लेकर उन लक्षणों को प्राप्त किया है। लेकिन उनके पति उतने जन्मों नहीं लिया है। इसीलिए एक स्त्री जैसा प्रवर्तन करता है और जबकि वह कितना धैर्य बताती है, उनका धैर्य नहीं होता है।

देखिए हमारा पत्री जी को उसको कितना धैर्य है। हम सोच भी नहीं सकते हैं। वह करोड़पति नहीं है, करोड़ों कुछ नहीं है। लेकिन फिर भी कितने बड़े–बड़े प्रोजेक्ट प्रारंभ किए हैं।

शुरुआत में 2004–2005 संवत्सर में मैंने उनके घर गया था । वहां पर पाल विजय कुमार, विशाखापट्टनम से आया है। क्यों आया है ? बेंगलुरु में एक प्रोजेक्ट के लिए सब जगह घूम कर एक घाटी को चुना है। पत्री जी को बताया है, लेकिन उसका रजिस्ट्रेशन के लिए 15 लाख रुपए जरूरत था।

इसके लिए वैजा़ग जाकर सबसे पूछ कर, पूछने से एक–एक ने 25 हज़ार रुपए देने को तैयार हो गए थे, ऐसे कह रहा था पत्री जी से। तब उस

समय उनके जेब में एक भी पैसा नहीं था। तब मैं सोचा था कि यह रजिस्ट्रेशन कैसा होगा ? यह प्रोजेक्ट कैसे बनाएंगे ? क्या इनका धैर्य है ? असलियत में वह उनके बारे में कुछ भी नहीं सोचा है। तब मैंने ऐसे ही पूछा था, उनसे कि, अभी उनके हमें जरूरत है क्या ?

तब उसने कहा था कि जब लड़की मेच्योर हो जाती है, उनका शादी करवाना है कि नहीं ? तब मैंने बोला, करवाते हैं ! अभी हमारा समिति के लिए इनका अवसर आ गई है। इसीलिए उसका प्रयत्न हम अभी कर रहे हैं। इसके बाद उसको शुरू कर कर उनका एक रूप तक लेकर आया है।

वह प्रोजेक्ट पूरा करने के बाद कडताल में शुरू किया था। उसका भी एक रूप लेकर आया था। इसके बाद पेरवाराम। इन सब के ऊपर पीएमसी चैनल स्टार्ट किया था। क्योंकि इससे पहले किसी भी टीवी चैनल में उनका हर महीने कुछ ना कुछ देना पड़ता था। जब कहीं भी पत्री जी इंटरव्यू देते थे सब लोग उस चैनल में उस टाइम के हिसाब से सब लोग देखे थे। और मैसेज भेजने से सब लोग देखे थे। तो इससे अच्छा हम खुद ही क्यों न टीवी चैनल प्रारंभ करें ? और प्रारंभ करने के लिए मामूली विषय नहीं है।

यह हमसे कैसे हो जाएगा, बहुत करोड़ का प्रोजेक्ट ! कितने लोग हैं जो चैनल शुरू करके इसके बाद बेच दिए हैं ! लेकिन पत्री जी तो कहीं भी डरते नहीं थे। वह कहते थे कि आपको कुछ डरने का नहीं है। आगे चलते जाओ, बहुत धैर्य बताते थे। हम तो सोच रहे थे, एक ही चैनल से ही डर रहे थे, तो उसने फटाफट हिंदी में, कन्नड़ में, तमिल में, मराठी चैनल भी स्टार्ट करवाए थे।

उसने बोला कोई चिंता नहीं है। पैसे खुद-ब-खुद आ जाएंगे और धैर्य कहते थे।जब हम भी धैर्य से सत्य मार्ग में आगे जा रहे हैं, कोई डरने के जरूरत नहीं है। पीएमसी का लक्ष्य सत्य को व्यापित करना। इसीलिए उसका एंबलम लिखा था ''हर क्षण, सत्य दर्शन''।

पत्री जी ने कहा था कि पानी नीचे की तरह जाती है, और सत्य व्यापक होती है। मतलब जैसे पानी नीचे की तरफ दौड़ती है, सत्य ऐसे ही

व्याप्ति हो जाती है। इसका मतलब क्या है ? असत्य व्यापित नहीं होता, बढ़ता नहीं और वृद्धि नहीं होता है। अगर वही सत्य है तो धीरे–धीरे अनंत की तरफ वृद्धि हो जाती है।

इसीलिए हमें सत्य को पकड़ना है। सत्य का आश्रय करना है, और सत्य में ही जीना चाहिए। ऐसे लोगों को कुछ कमी नहीं होगी। इसीलिए हम जब सत्य को प्रोत्साहित करते हैं, तब पीएमसी को भी कुछ कमी नहीं होगा, बढ़ोतरी में। प्रकृति को वही चाहिए सत्य ही चाहिए।

जो सत्य के लिए काम करते हैं, प्रकृति उनको सहकार देती है। जैसे पत्री जी ने कहा है कि समय पर जो आना है, वही आएगा। केवल ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान ही एक मात्र मार्ग है, सत्य को आश्रय करने के लिए। ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान के अलावा और कुछ भी आश्रय करने से, मतलब वह बातों पर, या म्यूजिक पर, या गाने पर, या किसी का नाम पर, या किसी का रूप पर, या मंत्र, या और कुछ चीज को आश्रय करने से, असत्य को आश्रय करने समान है।

क्योंकि इस सृष्टि में आत्मा ही सत्य है। आत्मा के अलावा जो भी है, सब असत्य है। आत्मा से सृष्टि हुआ है और आत्मा से निकला हुआ है जो भी होगा, वह असत्य होगा। असत्य को आश्रय करने वाला को पराजित होगा। तत्कालीन उसको विजय दिखता है, लेकिन वह भी पराजय ही है। इसीलिए मैं कह रहा हूँ की सत्यमय इस ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान को कभी नहीं छोड़ना है। तब हमें कुछ भी कमी नहीं होगा। बहुत अच्छी तरह हो जाएंगे और महान बनेंगे।

हम अपने गांव में एक छोटा सा प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए, हमसे कहां होगा ? क्या सफल होंगे या नहीं, करके सोचते हैं। लेकिन ''यद्भावाम तद्भवति'' का कहावत, मतलब जैसे आपके भाव होगा वैसे ही हो जाएगा।

अगर देखते हैं तो दूसरे सब लोग क्या मैं कर सकता हूँ करके सोचते हैं। हमसे हो पाएगा या नहीं करके पीछे हट जाते हैं। लेकिन पत्री जी कभी भी पीछे नहीं हटते थे। धैर्य से आगे बढ़ते थे और अंत में वह हासिल

करते थे। मतलब इतना धैर्य से कौन हो सकता है ?

जो भी आखरी जन्मों में रहते हैं वह अपनी स्थाई में धैर्य प्रदर्शन करते हैं। हम सबको भी उस धैर्य प्रदर्शन करना चाहिए। आप सभी लोग भी कम नहीं है, लेकिन कुछ लोग ज़ूम क्लास में वीडियो ऑन करने के लिए डरते हैं। बात करने में डरते हैं। क्यों डरना है ? एक दो बार फेल होते हैं और क्या हो गया ?

एक दो बार फेल नहीं करेंगे तो पास कैसे होंगे ? कोई भी, डॉक्टर भी कुछ लोगों को मरवाने तक एक्सपर्ट नहीं बनता है। अगर वह डर के कहता है कि मैं इस ऑपरेशन नहीं कर सकता हूँ। और वह मर जाएगा, वह कभी भी एक्सपर्ट नहीं बन सकता है। इसीलिए कुछ भी चीज धैर्य से प्रारंभ करना है।

प्रारंभ में कुछ लोग सीनियर मास्टर्स कहते थे। मुझे अच्छा नहीं लगता था। क्या हम सीनियर नहीं बन सकते हैं ? वह जो भी कहेंगे हम भी बता सकते हैं। असलियत में उसने क्या बताया और उसमें क्या है ? का भाव में रहता था।

श्री कृष्ण ने बताया कि ''यद्भावाम तद् भवति''। यह विषय मुझे सही लग रहा था। मेरे विषय में यह बात सही लगता था। मैं क्यों सीनियर नहीं बन सकता था ? का भाव में रहता था! इस भाव आज मुझे इस स्थाई तक पहुंचा दिया है।

इसलिए हम स्त्री है या पुरुष हैं, धैर्य के साथ रहना हैं। यह मत समझना कि मैं स्त्री हूँ, इसलिए डरना है। हर कोई आत्मा ही है। इसीलिए स्त्री भी हो ज़रूर धैर्य प्रदर्शन करना चाहिए । युद्ध में भाग लेना ही धैर्य नहीं है। ध्यान के बारे में बताना, ज्ञान प्राप्त करके बताना, हर जगह जाकर ज्ञान के बारे में बताना, यह सभी धैर्य कार्यक्रम है। यह पुरुष जन्मों में सीखने वाले लक्षण ''धैर्य'' है। यह सभी को होना चाहिए।

(2) साहस ।

स्त्री हो या पुरुष दोनों आत्माएं हैं। यह सभी को याद रखना चाहिए। लेकिन एक स्त्री अपने आप को स्त्री समझती है। एक पुरुष अपने आप को पुरुष समझता है। हर एक को मैं स्त्री नहीं हूँ, मैं पुरुष नहीं हूँ, मैं केवल एक आत्मा हूँ, का भाव में रहना चाहिए। हर क्षण याद रखना चाहिए।

मैं इस शरीर हूँ, मैं स्त्री, मैं यह जाति का हूँ, मैं पत्नी हूँ, मैं पति हूँ, यह सभी अगर आप सोचेंगे, तब आपका जीवन विधान एक तरह रहेगा। अगर आप सोचेंगे कि मैं आत्मा हूँ, और यहां कुछ पाठों सीखने के लिए आया हूँ, इसीलिए जन्म लिया हूँ, तब आपका जीवन विधान अलग होगा।

देखिए एक सिनेमा में एक हीरोइन पत्नी बनकर नाटक करती है, मतलब एक हीरो का पत्नी बनकर नाटक करती है। अंदर से उनको अच्छी तरह मालूम है कि, मैं यहां नाटक कर रहा हूँ का भाव रहता है। जब तक वह सिनेमा खत्म ना हो वही मेरी पत्नी है और इसी तरह जब तक यह सिनेमा खत्म ना हो वही मेरे पति है का भाव में रहते हैं।

इसी प्रकार हम सब आत्माएं हैं, कुछ पाठों सीखने के लिए, कुछ पात्र लेते हैं। एक पाठ 30 जन्मों में सीख सकते हैं, या 50 जन्मों में या तो दो-तीन जन्मों में ही सीख सकते हैं। जितना कम जन्मों में सीख सकते हैं, उतना कम जन्म होते है।

साहस का लक्षण पुरुष जन्मों में सीखते हैं। सहज बात है कि बहुत कुछ लोग साहस करते रहते हैं। हम सब यूट्यूब में देखते रहते हैं, कई प्रकार के साहस को।

कुछ लोग पर्वतों चढ़ते हैं, समुंदर में तैरते हैं, पर्वतों से नीचे कूदते हैं, और जंगलों में जाते हैं। जहां कहीं कुछ भी नहीं मिलता है वहां जाना है, जैसे रेगिस्तान में जाना, वहां पर कार और बाइक रेस में भाग लेना, और कुछ लोग हैं जब कोई घर में आग लग जाता है वह लोग उस आग में जाकर कुछ लोगों को रक्षा करते हैं, और कुछ लोग हवाई जहाज से, आसमान से नीचे

कूदते हैं। ऐसे बहुत सारे साहस करते हैं ।

ऐसे साहस कोई भी कुछ जन्मों में करते रहते हैं। मुख्यत: रजोगुण में जब रहते हैं, यह सब कर कर रिकॉर्ड बनाते हैं। आप देखिए पत्री जी ने क्या कहा है ? जैसे पाताल भैरव का सिनेमा में उस मांत्रिक कहता है, ''साहस करो डिंबका'', जो कुछ चाहिए मिल जाता है ! मतलब जितना ज्यादा साहस करते हैं, उतना महान हम बन जाते हैं, का विषय जान सकते हैं।

इतना ही नहीं जब यह सिनेमा देखते हैं अगर आप देखेंगे, तो कुछ ना कुछ साहस दिखाते रहते हैं। क्यों रहती है ? क्योंकि जब तक यह साहस रहेंगे तभी लोग आसक्ती से सिनेमा देखने आते हैं।

इसीलिए ना केवल खाना, सोना, परिवार को देखना, घर बनाना, इन सब के अलावा कुछ अलग सा कार्यक्रम करना चाहिए। कारण यही है कि खाना, सोना और परिवार के लिए आप इस पृथ्वी पर नहीं आए हैं। भूमि पर आए हैं, कुछ महान कार्यक्रम करने के लिए।

शरीर को सही रखने के लिए खाना, सोना, परिवार और घर के अवसरों को पूरी करते-करते, जो कुछ भी कर सकता है, अपने स्थाई पर कुछ-कुछ महान कार्यक्रमों करना चाहिए। न केवल बस आराम से खा पीकर सोना और मस्ती करना। ऐसे अपने जीवन को बिताना नहीं चाहिए क्योंकि, जब पृथ्वी पर आप जो पाठों सीखने के लिए आए हैं, अगर नहीं सीखते हैं, तब आपको जो अनुभव पाना है, वह पाने के लिए दोबारा आपको यहां पृथ्वी पर आना चाहिए।

बहुत लोगों को अपने जीवन में बिना समस्याओं और कष्टों रहने को इच्छा करते हैं। अपना जीवन ठीक तरह से रहेगा तो उन्हें सीखने के लिए क्या रहेगा ? इसीलिए कभी भी खाली नहीं बैठना है, कष्ट करना है, कुछ तो कुछ सीखना चाहिए। कुछ ना काम कुछ काम करना चाहिए, दूसरे लोगों को उपयोगि काम करना चाहिए।

अगर आप ऐसे जिएंगे, तब वह साहस जीवन रहेगा। ऐसी चीजों के लिए अपना जीवन समर्पित करना चाहिए। यही नहीं है कि सिर्फ अपने पास

जो है, उसी में कुछ देना भी साहस कार्य है। जब लोक कल्याण कार्यक्रमों के लिए, दूसरों को सेवा करने के लिए, जो आपके पास है उसमें थोड़ा देना भी साहसी जीवन है।

कुछ लोग साहस कार्यक्रमों का पराकाष्ट जो जाते हैं, वह क्या करते हैं? अपने लिए कुछ भी नहीं सोचते हैं, अपना सुख को भी नहीं देखते हैं, खुद का कुछ आया है कि नहीं भी देखते हैं। सिर्फ दूसरों के लिए अपना जीवन जीते हैं। ऐसे जीना भी एक साहस कार्यक्रम है। यह सारे साहस कार्यक्रम रजोगुण वाले करते रहते हैं।

ऐसे कुछ जन्मों बिताने के बाद, तब सात्विक गुण में वह लोग जब आते हैं, उनका साहस कार्यक्रम बदल जाते हैं। साहस कार्यक्रम मतलब न केवल पर्वतों चढ़ना, वहां से कूदना। लेकिन जो आपके पास है वह दूसरों को देना, यह सभी त्याग करना, भी, एक महान साहस ही है।

अगर गांधी जी को देखते हैं तो अपना जीवन खुद के लिए नहीं जिया है। देश के लिए जिया है। एक मदर टेरेसा देखिए, वह भी दूसरों के लिए अपना जीवन बिताया है। ऐसे लोग जो महान कार्य करते हैं वह लोग जना लोक पार कर कर ऊपर लोकों में, महालोक पहुंचते हैं।

सहज बात है कि संसार में ऐसे स्थिति है कि, जब अपने बच्चों ऐसे कार्यक्रमों देखते हैं, प्रभावित होकर, उनका भी ऐसे कार्यक्रमों करने लगता है। लेकिन अपने माता-पिता और बड़ों ने उनको निराशा करते हैं। वह कहते हैं कि वह आपसे कैसे होगा? किस लिए करना है? अपना काम खुद देखो और आराम से जियो! अगर ऐसे साहस कार्य करने पर अगर कुछ हो गया तो? आपका जीवन क्या हो जाएगा? आपके बच्चे को क्या हो जाएगा? आपके लिए यह सब किस लिए? करके निराशा करते हैं।

लेकिन पत्री जी ने बताया है कि, बच्चों को कभी भी निराशा करना नहीं चाहिए। उनको सिखाना चाहिए कि अंधेरे में जाने के लिए, शमशान के पास जाने के लिए, और कोई भी काम निर्भय से करने के लिए। उनको भय सीखना नहीं चाहिए, तभी वह बहुत महान कार्य करेंगे।

सभी मानव लोग किसी न किसी महान कार्यक्रम करने के लिए ही, और हासिल करने के लिए जन्म लेता है। डरकर जीने के लिए नहीं। आत्मा का इच्छा भी साहस करने के लिए ही है।

शरीर का इच्छा अपना भूख मिटाने के लिए। आत्मा का इच्छा साहस करने के लिए। इसीलिए जो भी अपने आप को शरीर समझता है, अपने भूख मिटाने के लिए जीता है। जब मैं आत्मा हूँ को जानता है, तब वह साहस कार्य करने के लिए प्रयत्न करता है, और साहसी बन जाता है।

जो अपने आप को मैं आत्मा हूँ करके जीता है, उनके लिए साहस सहज लक्षण हो जाता है। जो भी आत्मज्ञान में प्रवेश करता है, उनके लिए साहस कार्य, हर दिन सहज रहता है। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि बचपन से ही बच्चों को साहस सिखाना चाहिए ।

उनको कभी डराना नहीं है कि भूत है, प्रेत है, कोई आ जाएगा, और कोई खा जाएगा। ऐसे कभी भी डराना नहीं चाहिए। यह सब बताकर उनको डरपोक बना देते हैं। और वह किसी काम कर नहीं पाता है। जब बच्चों मस्ती करते हैं, उनको चुप करने के लिए डराना सही बात नहीं है। वह मूर्खतापन ही है।

शमशान के तरह लेकर जाना है। वहां पर भी वह अपनी स्वेच्छा से घूमना चाहिए। निर्भय रहना चाहिए। नदी में तैरना चाहिए। यह सब आप पास रहकर सावधानी से उन सब साहस कार्यक्रम सिखाना चाहिए। जबकि सब लोग मना करते हैं, तब भी जो आत्मा को लगता है, अपने हृदय से, निर्भय से, करते जाना ही साहस कार्य है।

आत्मा हर वक्त धर्म ही बताती है। इसीलिए आपको यह नहीं सोचना है कि, दूसरा लोग क्या कहेंगे, क्या समझेंगे। जो अपने हृदय में लगता है, वह निर्भय से करते जाना ही साहस है। जब एक आदमी ऐसा करता जाता है, दूसरों भी ऐसे इनको देखकर ऐसे ही करेगा। पत्री जी ने निर्भय के साथ कहा है कि, पूजा मत करना, सत्य को पकड़ना। कोई नाम नहीं है, कोई मंत्र नहीं, कोई रूप नहीं, मांस खाना नहीं चाहिए। और वही बात हम भी निर्भय से

बता रहे हैं, और कर रहे हैं। यही साहस है।

जब कोई एक करेगा दूसरे लोग उनका अनुकरण करता है, और महान बन जाते हैं। याद रखिए! साहस के लिए ऊपर लोक में बड़े-बड़े मार्क्स मिलेंगे। अगर आप भूमि पर कोई भी साहस कार्य नहीं करते हैं, ऊपर लोक जाने के बाद आपसे पूछते हैं कि, क्यों नहीं किए हैं कोई भी साहस कार्य ?

अगर आप बताएंगे कि बच्चों के वजह से, अपना उद्योग के वजह से, कितने सारे काम थे। यह सभी कथाएं अगर आप बता भी सकते हैं, लेकिन आपको कुछ भी मार्क नहीं लगेंगे।

जब मैं बुलाता हूँ, भीमावरम तीन दिवसीय क्लास में, बहुत सारे कारण बताते हैं। लेकिन उस ज्ञान को समुपार्जन कर कर, अगर आत्म स्थिति में जीते हैं, ऊपर लोकों में जब जाएंगे, तब आपको कई मार्क्स लगेंगे। जब आप परीक्षा लिखते हैं, तब मार्क लगते हैं, प्रमोशन मिलता है। अगर नहीं लिखते हो तो, मार्क ही नहीं मिलेगा और प्रमोशन नहीं रहेगा। अगर ज्ञान को समुपार्जन नहीं करते हैं, तब ऊपर लोकों को नहीं जा पाएंगे और जहां है वहीं रह जाएगा और नीचे भी जा सकते हो।

पत्री जी ने क्या कहा है ? ''श्वास पर ध्यास'' रखकर ध्यान करना सबसे महान साहस कार्य है। मानस को निर्मल करना, शुद्धिकरण करना, तीसरा आंख प्राप्त करना, अपने पिछले जन्मों को देखना, सबसे महान ''साहस'' कार्य हैं। सारे कार्यक्रमों से सबसे महान साहस कार्यक्रम सिर्फ और सिर्फ ''श्वास पर ध्यास'' रखकर ध्यान करना ही है। उस ध्यान द्वारा ज्ञान को प्राप्त करना है। इसीलिए आईए हर रोज़ यह महान साहस कार्यक्रम करते हैं, ध्यान में निमग्न हो जाते हैं।

जो रजोगुण में रहते हैं, उनका साहस कार्य अलग होता है। जो सात्विक गुण में रहते हैं उनका अलग होता है। जो शुद्ध सात्विक गुण में होते हैं, उनका अलग होता है। जो आत्मा स्थिति में रहता है, उनका साहस कार्य अलग होता है। उतना ही नहीं यह स्थिति पहुंचने तक क्या करते हैं, कि सत्य

को आश्रय करते हैं। सत्य को निर्भयता से बोध करते हैं और सत्य में जीते हैं। यह कैसे साहस कार्य है ? मतलब मगरमच्छ के रहने वाले सरस में जाने जैसा है ! सत्य को आश्रय करना, सत्य को बोध करना, सत्य में जीना बहुत महान साहस कार्य है।

ऐसे कार्य करने वालों को प्रकृति अपना सहाय करती है। अभी हम सब लोग भी वही कार्य कर रहे हैं। जो आत्मा स्थिति में है, वही कर सकते हैं, महान साहस कार्य।

आजू बाजू वाले लोग जो कुछ कहे, उनको ना मानकर जो काम करना है उसी में लीन होना, एक मास्टर का लक्षण है। एक और बात जानना चाहिए। जब हम साहस कार्य करते हैं, विजय और पराजय संबंध नहीं है। वह सक्सेस हुआ या फेल हुआ का बात ही नहीं है। आपने कार्यक्रम लगाया है, नहीं तो कोई क्लास में गया है, वहां पर कितने लोग आए हैं, यह सब जरूरत नहीं है। अनावश्यक है । आपने जितना महान कार्य किया है, या नहीं ? आपने तो जाकर बताया है या नहीं ? यही बात मुख्य है।

जब आपको किसी अवसर मिला है, आप ने उसको उपयोग किया है या नहीं ? यह मुख्य है ! हमारे सब लोग यह साहस का अभ्यास करते ही रहते हैं। ऐसे लोग आध्यात्मिकता में बढ़ते रहेंगे। अपने जीवन में कई लाभ मिलते रहेंगे। और ऊपर लोकों में चले जाएंगे।

(3) पहल (नेतृत्व) ।

पुरुष जन्मों में सीखने वाला एक और लक्षण है "पहल करना"। सहज बात है कि पति-पत्नी के बीच में हर एक विषय में पहल पुरुष ही करता है, और स्त्री हर बार पुरुष को अनुकरण करती है। जब अवसर है उस समय सलाह देती है, लेकिन निर्णय तो पुरुष ही लेता है।

यात्राओं में जब बाहर निकलते हैं, या रात के समय में, आखिर झगड़ों में भी, पुरुष ही पहल करता है, और आगे निकलता है। हर एक विषय में स्त्री, पुरुष के पीछे ही सहकार करती है।

इसीलिए पुरुष जन्मों में पहल करना, का लक्षण अच्छी तरह सीखना है। कोई भी लक्षण एक ही जन्म में नहीं आता है, कई जन्मों लगते हैं। अगर आप देखेंगे प्रकृति में पुरुष को ताकतवर शरीर और मजबूत शरीर दिया गया है। लेकिन स्त्री को संवेदनशील और कोमल शरीर दिया गया है। इसीलिए स्त्री कोमल है और पुरुष के अधीन हो जाती है। ऐसे ही पुरुष को यही सारे लक्षणों को पाना है। तभी परिवार में भी उसका पहल चलता है, और प्रभाव रहता है। संभोग के समय में भी, अगर आप देखेंगे तो पहले पुरुष ही पहल दिखाता है, और स्त्री भी वही चाहती है।

एक स्त्री अपना शरीर पुरुष को देती है, और पुरुष कुछ भी करो वह कुछ मना नहीं करती है। कभी–कभी उसको सहन भी लेती है। इस प्रकार का प्रबंध प्रकृति में रहता है। सहज है पुरुष के लिए इतना मजबूत शरीर है, तभी यह कार्यक्रम सृष्टि का होती है, और इस सृष्टि आगे बढ़ती है। अगर पुरुष कमजोर रहेगा और स्त्री मजबूत रहेगा वह कार्य नहीं होगा, और इसीलिए इस सृष्टि में यह प्रबंध है।

इसीलिए देखिए जानवरों में, या पक्षियों में, या कीटकों में भी, या किसी और जाति में पुरुष शरीर स्त्री शरीर से कई बार मजबूत और ताकतवर रहता है। देखिए एक पुरुष सिंह को कितना मजबूत शरीर रहता है। स्त्री सिंह को शिवांगी कहते हैं, और वह पुरुष शरीर को देखते ही वह झुक जाती है।

इतना ही नहीं, एक पुरुष, स्त्री को आकर्षित करना है, तभी पुरुष शरीर सहज है कि वह सुंदर दिया गया है। इसी प्रकार मोर और मोरनी के पंख देखिए, कितना अलग रहता है। मोर के पंख बड़े होते हैं, जो मोरनी का नहीं रहता है। जब मोर उस पंखे को खुलता है, तब उस मोरनी आकर्षित होती है।

इसी प्रकार एक पुरुष हिरण को सुंदरमय सिंग रहते हैं और स्त्री हरिण को सिंह नहीं रहते हैं। इसी प्रकार हर एक जाति में स्त्री शरीर कमजोर रहता है, छोटा रहता है। और पुरुष का शरीर मजबूत और ताकतवर रहता है। यह सभी इस सृष्टि में सृष्टि कार्य करने के लिए ही, यह प्रबंध रखी है, तभी इस सृष्टि युगों से चलती आ रही है।

तभी कोई भी जीव इस सृष्टि में खत्म नहीं होंगे, ऐसे ही आगे बढ़ते रहेंगे। इस सृष्टि इस प्रकार कई करोड़ साल तक सृष्टि का रचना हुआ है। अगर सृष्टि आगे बढ़ाना है तो, उसमें सब कुछ रहना है, सब की जरूरतों है, कुछ भी ना रहने पर कमी दिखती है। देखिए सृष्टि करता ने अपना बुद्धि बल से कितना महान सृष्टि किया है। अगर देखेंगे तो आश्चर्य लगता है।

उस भगवान मतलब सृष्टि करता का बुद्धि कितना महान है बताने के लिए, पुराणों में एक कथा बताते हैं।

एक आदमी गर्मियों में सफर करते-करते थक जाता है। उस गर्मी की तीव्रता से वह सुस्ती रह जाता है और थोड़ा समय विश्राम कर कर, दोबारा सफर करने को सोचता है। और एक वट वृक्ष के नीचे सो जाता है।

ऐसे जब सोया था, देखा था कि आजू-बाजू में बहुत सारे वटवृक्ष के बीज दिखे हैं। तब उसने सोचा था कि भगवान कितना बुद्धू है, इतना बड़ा वटवृक्ष के लिए इतनी छोटे-छोटे बीज हैं। और जो ज़मीन पर निकलते हैं, कद्दू, के इतने बड़े-बड़े बीज हैं। मैं समझता था कि भगवान बहुत बुद्धिमान है, लेकिन लगता है कि वह बुद्धू है। ऐसे सोचते सोचते सो जाता है।

तीन घंटे बाद, नींद से जब उठ जाता है, देखा है कि अपने शरीर में बहुत सारे वटवृक्ष के कच्चे फल पड़े हैं। और वह आश्चर्यचकित हो जाता है! तब समझ जाता है कि भगवान का निर्णय मुझे गलत लगा था। मैं गलत समझा था। अगर इतने बड़े वटवृक्ष के कद्दू जैसे फल रहते, तब मेरा जिंदगी क्या हो जाता है? अभी तक तो मैं मर जाता हूँ। भगवान जो भी करता है, सब सोच समझ कर करता है। उनके कार्यक्रमों को समझने के लिए, शक्ति और बुद्धि हमें नहीं है, का विषय समझ आया है।

इसीलिए भगवान का कोई भी प्रबंध गलत नहीं होता है। अगर इस सृष्टि आगे जाना है तो किस जीव को कौन सा लक्षण रहना है? वह सभी लक्षणों उन्होंने प्रबंध किया है! इसीलिए स्त्री को कैसे लक्षण रहना चाहिए, ऐसे लक्षण दिया है। पुरुष को कैसे आकार देना है, ऐसे ही आकार पुरुष को दिया गया है।

जब हम देखते हैं कोई भी जीव या प्राणी संभोग करते हैं, स्त्री जानवर नीचे रहती है, और पुरुष इसके ऊपर संभोग करने के लिए चढ़ाना चाहिए,बल्कि उल्टा करने से सृष्टि का कार्य नहीं बढ़ेगा और सृष्टि वहां तक खत्म हो जाएगा।

इतना ही नहीं, वह पुरुष जानवर मजबूत रहती है, तभी स्त्री जानवर को झुका सकती है और संभोग कर सकती है। नहीं तो वह कार्य नहीं होता है। कोई भी स्त्री जानवर उस कार्य के लिए सिद्ध रहना चाहिए। जब ऐसे कार्य के लिए सिद्ध रहती है, तब हम कहते हैं कि वह मैच्योर हो गई है। मतलब वह पुरुष जानवर से संपर्क के लिए सिद्ध हो गई है। तब उसको पुरुष जानवर के पास संभोग के लिए लेकर जाते हैं और बाद में वह गर्भवती बन जाती है।

गर्भवती होने के बाद, 6 महीने बाद, वह संभोग के लिए तैयार हो जाती है। इसीलिए एक बार संभोग करने के बाद वह कभी मांगती नहीं है। और ऐसे रह जाती है। कुछ जानवरों एक साल तक रहते हैं, लेकिन मानव लोगों में एक ही महीने के बाद, एक स्त्री को ऋतु संक्रमण रहता है।

तब मुझे एक संदेह रहता था। मानव लोग हर रोज संभोग सुख चाहते हैं ना ? लेकिन जंतु जानवर 6 महीने को या तो एक साल में एक ही बार सुख प्राप्त करने को जैसे भगवान प्रबंध क्यों किया है ? ऐसे संदेह मुझे होता था ! लेकिन जब सोचेंगे अच्छी तरह से, जिसको कैसे रहना है उसको ऐसे ही प्रबंध रखे हैं का समझ आता है।

इसलिए भगवान जो भी करता है एक कारण होता है, बिना कारण कुछ नही होता है। देखिए, 10 मुर्गियां के लिए एक ही मुरगा, 10 बगरियां को एक बकरा पालते है।

बल्कि अगर 10 के 10 स्त्री पक्षियां, या स्त्री जानवर रहेंगे तो कितना मुश्किल होगा ? अगर 10 के 10 एक ही स्त्री के ऊपर, या स्त्री जानवर के ऊपर चढ़ जाएंगे, तो कितना मुश्किल होगा उनके लिए ? तभी भगवान ने सोच समझकर यह सारे प्रबंध रखे हैं ! यह सभी चीजों जब प्रकृति में देखते हैं, तब समझ आते हैं और बहुत कुछ सीख सकते हैं।

इसीलिए भगवान के सृष्टि में सीखने के लिए बहुत कुछ है। मुझे बचपन में झांझों से चिढ़ जाता था। मैं सोचता था कि भगवान ने इनको क्यों बनाया है ? यह झांझों पत्तों को सुबह तक पूरा खा लेते थे। मैंने एक गड्ढा को खोदकर उसमें दफनाते थे। लेकिन इस ध्यान में आने के बाद मुझे समझ आया है की, वह उतना नाश करने के बाद, वह अपनी आशियाना बनाकर एक तितली बनकर निकलती है।

इतना चिडचिडाहट देने वाली झांझा, एक सुंदर सा तितली कितना आकर्षित करती है! मतलब इस झांझा से कोई उपयोग नहीं है क्या? जब सोचा था, तब मुझे समझ आया है कि यह तितली हर एक पुष्प के ऊपर चढ़कर, उसको पर पराग संपर्क करती है। मतलब पुरुष पुष्प के ऊपर चढ़कर उसका पाउडर लेकर स्त्री पुष्प के ऊपर रखती है, और इसकी वजह से हमें नया फल और पुष्प और फसल मिलते हैं। और उन्हीं को खाकर मानव लोग जीत रहे हैं। अगर वही झांझा नहीं रहता है तो, यह काम नहीं होता और फसल नहीं आता और मानव जीवन आगे नहीं बढ़ता है।

इसीलिए वृक्षों में भी स्त्री और पुरुष का भेद हमें दिखता है। जैसे नारियल का पेड़ है तो, एक ही रहता है। खजूर का पेड़ स्त्री और पुरुष दोनों होते हैं। स्त्री खजूर का पेड़ से फल निकलते हैं, और पुरुष वाले पेड़ में से कुछ नहीं, सिर्फ फूल होते हैं।

ऐसे वृक्षों में और जानवरों में, हर एक में, अगर देखते हैं तो हमें समझ आता है कि भगवान ने सृष्टि कितना महान रचा है। और आश्चर्य चकित होता है। बुद्धि जब विकसित होती है तब बहुत कुछ सोचते हैं, और उनसे बहुत सीखते हैं। नहीं तो खाना, पीना, सोना! इन तीनों अगर काफी समझेंगे तो तीनों के लिए ही जिएंगे।

जितना ज्यादा बुद्धि बढ़ती है जीवन में उतना ज्यादा सीखते हैं और अनुभव पाते हैं। इसीलिए बुद्धि को विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए। जिंदगी सिर्फ बच्चों को पैदा करने के लिए, परिवार काम करने के लिए, और इन बच्चों को बढ़ाने के लिए नहीं है। इस सृष्टि में देखकर बहुत कुछ सीखने

के लिए है। और सीख कर को क्रिएटर बनकर, तब सृष्टि करने के लिए, और सृष्टि कार्य में भाग लेने के लिए ही है।

हम जो आत्माएं है, इस भूमि पर आए हैं, बहुत कुछ ज्ञान सीखने के लिए। और देव स्थिति अगर प्राप्त करना है तो उनके लिए सारे लक्षणों रहना चाहिए है ना? पूर्णत्व पाने के लिए है ना? इनके बारे में बहुत सोचना है। तभी हम सीखेंगे। इसीलिए हर एक विषय जो हो रहा है, उस पर संदेह आना चाहिए, तभी आपको समाधान मिलेगा और तभी आप सीख सकते हैं।

उस स्थिति में हमारे बड़ों ने हमको समझने के लिए बहुत सारे कथाओं लिखे हैं। हम भी बड़े होने वाले हैं, और हमारे बाद के बच्चे हमें उदाहरण बताएंगे और उदाहरण बताना चाहिए। कितने साल पहले पैदा हुआ वेमना के बारे में, और वीर ब्रह्मेंद्र स्वामी के बारे में, हम अभी बता रहे हैं ना? और अभी हम पत्री जी के बारे में बात कर रहे हैं। यह बात सृष्टि में सहज है, वह हर वक्त नहीं रहेंगे और दूसरे नए लोग आएंगे। सृष्टि में बदलाव सहज है और सब कुछ बदलते रहते हैं, कुछ भी शाश्वत नहीं है।

हम जो नए लोग हैं, उस स्थिति तक पहुंचना चाहिए। इसी के लिए यह जन्म है। इसीलिए आप लोग जरूर समझिए। पहल करना पुरुष जन्मों में सीखने वाले एक महान लक्षण है, जो किसी भी जाति में रहता है। झगड़ा करने में भी पहल दिखाना चाहिए, संभोग में भी पहल दिखाना चाहिए, अंधेरे में जाने के लिए भी पहल दिखाना चाहिए, यह पुरुष का लक्षण है।

(4) वीरता ।

कोई भी जन्म में सिर्फ आत्मा को ही सीखना है और उन्हीं को हर तरह के अनुभव पाना है। इसीलिए स्त्री जन्म कहने से अच्छा स्त्री शरीर के साथ आत्मा कुछ सीखती है, और पुरुष शरीर के साथ आत्मा कुछ सीखती है। यह जानना चाहिए और उस लक्षण सीखने के लिए अनुकूलित शरीर लेती है।

स्त्री शरीर बहुत कोमल रहता है। एक प्रकार से कहेंगे तो वह कमजोर ही रहती है। जितना पुरुष वजन उठा सकता है, स्त्री उठा नहीं सकती है।

अगर देखेंगे तो पुरुष का शरीर मजबूत और ताकतवर रहता है। आकार भी बड़ा दिखता है। एक ही माता–पिता के पैदाइश करने वाले है भी तो, बच्ची कोमलता बन जाती है, और अगर बच्चा है तो बलवान बनता है। अगर हम देखते हैं, स्त्री जितना भी एक्सरसाइज या व्यायाम कर ले, या वजन उठा लें, कुछ भी करें, या कितना भी खाले, फिर भी उनका मांसपेशीयां बढ़ते नहीं है, जितना एक पुरुष का हो जाते हैं। इसीलिए पुरुष लोग ताकतवर रहते हैं।

वीरता का लक्षण पुरुष शरीर से ही सीखते हैं। किसको वीर जवान कहते हैं, जिसे अपना प्राण को भी दांव पर लगाते हैं और युद्ध करते हैं, उसी को वीर्यवान कहते हैं। एक वीर्यवान, जो चाहता है उसको हासिल करना है और विजय प्राप्त करना है, का भाव में रहता है। इसीलिए पूर्व काल से अगर देखेंगे तो युद्ध में बलवान पुरुष लोग ही भाग लेते थे। किसी को भी कुछ भी करना है तो बलवान शरीर रहना चाहिए। लेकिन स्त्रियों को बल का अवसर नहीं रहने वाले काम करवाते थे।

जो युद्ध में भाग लेता है उसको वीर कहते हैं। अपना प्राण जाने का डर से अगर भाग जाता है तब उनको डरपोक कहते हैं। एक प्रकार से जीवन भी युद्ध जैसा है। न केवल उस युद्ध में, इस जीवन के युद्ध में भी जो लड़ता है वही वीर्यवान है। किसी भी परिस्थितियों में कुछ भी प्रकार के कष्टों मिलने से भी, वह कभी पीछे हटता नहीं है। और डरना नहीं चाहिए। डरपोक जैसे आत्महत्या नहीं करना चाहिए। अगर ऐसे आत्महत्या करते हैं, तो उनमें वीरता नहीं है।

कुछ लोग कुछ कष्टों आने से ही कांपने लगते हैं और कहते हैं कि यह जीवन किस लिए? इससे अच्छा मर जाते हैं। ऐसे लोगों को वीर्यवान नहीं कहते हैं। जो वीर्यवान होता है, जीवन के समस्याओं से अंत तक जितना भी कष्ट हो, वह सामने करता रहेगा। और उसी में से अनुभव प्राप्त करता है। अगर उनको थोड़ा सा भी ज्ञान है, वह समझेंगे कि यह सभी मैं खुद लेकर आया हूँ। और मैं खुद चुना हूँ और उनके लिए मुझे डरना नहीं चाहिए और

भागना नहीं चाहिए और सामना करना है, समझेगा।

जो भी इन समस्याओं को सामना नहीं कर कर डरपोक जैसे आत्महत्या करते हैं, ऐसे लोगों को वीरता सीखने के लिए प्रकृति, अभी से भयंकर और कष्टमय जन्म देती है। जब आप अनुभव करेंगे और सहनेंगे करके इनको चुनकर आया है, अगर अभी आप डर कर जाएंगे तो, मतलब आपने अपना वही परिस्थितियों में जन्म लेंगे। अगर बात नहीं रखेंगे अपनी बात को, तब वही परिस्थितियों में जन्म लेना पड़ेगा। मतलब इस आर्थिक समस्याओं से अगर आत्महत्या करते हैं, दोबारा वही आर्थिक समस्याएं के साथ जन्म लेते हैं।

वैसे तो जन्मों जल्दी आएंगे या नहीं मालूम नहीं है, लेकिन जो आत्महत्या करते हैं, उनको तो जरूर जैसे एक गेंद को दीवार पर मारते हैं, वह तुरंत वापस आता है, ऐसे आ जाते हैं। क्योंकि वह लोग उस पाठ को अभी सीखे नहीं है। उसकी पूरी तरह सीखने के लिए इस प्रकार के समस्याओं के साथ दूसरे जगह पैदा होते हैं। और दूसरे परिवार में पैदा होते हैं, लेकिन समस्याओं वैसे ही रहेंगे और थोड़ा बहुत ज्यादा ही रहेंगे और सहनना पढ़ते हैं। इसीलिए पत्री जी ने बहुत बार कह चुका है कि, किसी भी हालत में आत्महत्या कभी नहीं करना है।

आत्महत्या का मतलब उनसे भागना नहीं, जैसे बर्तन से स्टोव के अंदर गिरना समान है। बहुत लोगों मामूली सी जीवन में अगर शिक्षा मिलता है तो, थोड़ा बहुत पैसा खिलाकर उनसे भाग सकते हैं कि समझते हैं। लेकिन उसे नहीं दिखने वाले गवर्नमेंट से किसी भी हालातों को आपको भागने नहीं देते हैं।

अगर साधारण से कटघर से भागने की कोशिश करते हैं, तब आपको दोबारा पकड़ कर शिक्षा देते हैं और ज्यादा शिक्षा देते हैं। और ताकि ना भागे, आपको अंधेरे कमरे में रखकर जंजीरों से बांधते हैं। अगर इस भूमि नामक कटघर से शिक्षा से भगाने का कोशिश करते हैं, तब प्रकृति कहती है कि, बेवकूफ! तुम इससे ज्यादा कठिन जन्म लेना पड़ता है और देती है।

इसीलिए कहते हैं किसी भी हालात में आत्महत्या नहीं करना चाहिए! जितना भी कष्ट हो, उसको सामने करने के लिए शक्ति और धैर्य अगर चाहते हैं तो साधना अच्छी तरह करना चाहिए। इसीलिए भीमावरम तीन दिवसीय क्लास में आएंगे तो साधना में अच्छा पकड़, आपको मिल जाएगा। अगर आप कुछ महीने तक लगातार आएंगे, तब आपको बिना मालूम होते हुए आप में बहुत शक्ति बढ़ जाती है। और जिसके पास शक्ति है वह किसी चीज का चिंता नहीं करते हैं। कोई भी कष्ट को वह सामना करने कर सकते हैं और उनको कष्ट नहीं समझते हैं।

अगर उसे शक्ति नहीं रहता तो, कांपने लगता हैं । और अपना जीवन से डर जाते हैं, कि ऐसे कैसे हो गया और मुझे नहीं हो पा रहा है करके मैं मर जाता हूँ। और भगवान को निंदा कर कर पूछता है कि मैंने कौन सी गलती किया है, ऐसे सोचते रहते हैं।

जब कष्टों आते हैं आत्महत्या नहीं करना है। वीर्यवान जैसे वीरता प्रदर्शन करना है। सत्य को आचरण करने के लिए भी वीरता चाहिए। सत्य आचरण का मतलब सामान्य विषय नहीं है। सत्य को बताने के लिए, सत्य बात करने के लिए, सत्य को बोध करने के लिए, सत्य को आचरण करने के लिए, और सत्य में जीवन बिताने के लिए, सत्य को स्थापना करने के लिए, आपको डरना नहीं चाहिए। भागना नहीं चाहिए। वीर्यवान जैसे सामने करना है, खड़ा होना है। कितना भी विमर्श करें और कुछ भी विमर्श करें उससे आपको हिलाना नहीं चाहिए।

अगर देखेंगे तो इस लोक में, इस संसार में, जो आचरण करते हैं पत्री जी बिल्कुल उसके विरुद्ध कहते थे। बहुत लोग उसको विमर्श करते थे। फिर भी वह कहीं पीछे नहीं हटा है। तब मैं सोचता था कि इसके पास इतना धैर्य कैसे आया है ? वह कोई भी सभा में जितने भी बड़े लोग होंगे, जो सच है उसको सामने बताते थे।

पत्री जी ने कहा है कि विग्रह भगवान नहीं है, कितना धैर्य होना चाहिए। इसके बारे में बहुत सारे जगहों मेरे झगड़े हुए हैं। वीर्यवान जैसे खड़े

हुए हैं और कभी भी वहां झगड़ों से भागे नहीं। वह ऐसे कहकर चले गए थे। यही वीरता है।

पत्री जी ने मांसाहार मना किया था, लेकिन सब लोग मांस खाने वाले ही है। बहुत लोग उससे झगड़ा किए हैं और पूछते थे कि कोई नहीं खा रहा है क्या? वह दुकानदार वाले और वह मुर्गी बेचने वाले, बकरी को बेचने वाले, उन सब को क्या हो जाएगा? वह क्या ऐसे कह रहा है करके विमर्श करते थे। लेकिन वह कभी पीछे नहीं हटे हैं और नहीं डरा है।

मैंने एक गांव को गया था। वहां पर बहुत मांसाहार खाते थे। जब इस विषय के बारे में बताया था कुछ लोग चुप रहे थे। लेकिन एक आदमी मुझे मारने आया था। यहां पर आकर आप यही पाठों सिखा रहे हैं क्या? ऐसे पूछा था। हम तो इसी पर जी रहे हैं और आप मना कर रहे हैं क्या? हमारे जिंदगी कैसे चलेगा? कोई भी बिना खाकर कैसे रहेंगे? ऐसे करके लोग झगड़ा करते थे। तब मैंने कहा था कि जो मुझे समझ आया मैंने बताया है, अगर आपको अच्छा लगता है उसको आचरण कीजिएगा नहीं तो मैं क्या कर सकता हूँ? आप खुद देख लीजिएगा।

ऐसे सारे विषयों को मैंने देखा। और हमारे ही मास्टर्स मुझे बताते थे कि सर जी यहां पर सारे लोग मांसाहार खाने वाले हैं, आप सिर्फ ज्ञान बता दीजिएगा धीरे–धीरे वह खुद ही छोड़ देंगे मांस खाना। लेकिन मुझे मालूम है कि अगर असली सच नहीं बताएंगे तब वहां जाना ही बेकार है। और अगर नहीं बताएंगे तो हम डरपोक ही हैं, मतलब वीरता नहीं है।

इतना ही नहीं, हमें हर बार अवसर नहीं मिलता है जब जब भी अवसर मिल जाएगा तो, एक साथ 100 लोगों को, या 50 लोगों को अगर कहेंगे, उसमें अगर एक भी मान जाएगा तो सही है। लेकिन वहां दोबारा क्लास रखे या ना रखें मैंने जो भी अवसर मिलता था, उसको छोड़ता नहीं था और सच बताता था।

उतना ही नहीं पत्री जी दवाइयां मना करते थे। तब कुछ डॉक्टरों ने उसको विमर्श करते थे। यह क्या बात है कि बिना दवाइयां कैसे जिएंगे? पत्री

जी तो पूरा विरुद्ध बता रहे हैं, लेकिन सत्य ही बता रहे थे। वह बताया कि आप शरीर नहीं है। यह भी विचित्र की बात है। सब लोग अपने आप को शरीर मानते हैं, और यह बोल रहा है कि आप शरीर नहीं है। इस तरह का सच बोलने के लिए बहुत–बहुत धैर्य चाहिए।

इसी प्रकार सब लोग अभी ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान मार्ग छोड़कर, असत्य मार्ग ''गाइडिंग'' में जा रहे हैं। असत्य जितना आकर्षित करता है सत्य उतना नहीं करता है।

वह सत्य नहीं है को बताने के लिए कितना धैर्य चाहिए! अगर उस स्थिति को सामने करना है तो, कितना वीरता प्रदर्शन करना है! लेकिन मैं कहीं डरा नहीं, और पीछे नहीं हटा है और यह भी नहीं सोचा कि, वह अपना काम है, मैं क्यों बीच में आऊं, तो उसमें भी मैं सच ही बताता था।

गाइडिंग के बारे में एक किताब भी लिखा हूँ। बहुत लोग ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान सही है को मानते हैं, लेकिन नए लोगों के लिए करके बताते हैं।

बुद्ध भगवान ने आना–पाना सती कहा था। उसी को पत्री जी ने ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान कहा था। सारे लोग जो हमारे ज़ूम में आते हैं, वह सभी बुद्धि स्थिति में रहने वाले हैं। इस बुद्धि स्थिति में रहने वाले, वीरता और धैर्य प्रदर्शन करते हैं।

लेकिन बुद्धि स्थिति से आत्मा स्थिति में अगर आ सकते हैं, और बहुत कुछ सीख सकते हैं। वीरता और धैर्य प्रदर्शन करते हैं, सहनने का भी सीखते हैं। और उनको ऐसे गुण नहीं होता है, जो नहीं मालूम है। आत्मा मतलब भगवान, वह सकल सद्गुणों रहने वाला और सकल लक्षणों रहने वाला है। अगर साधना तीव्रता से करेंगे तब यह सारे लक्षणों आते रहते हैं। और वह कुछ भी कर सकता है और हासिल भी कर सकता है।

यह वीरता पुरुष का लक्षण है। पुरुष शरीरों से ज्यादा सीखते हैं। लगभग एक स्त्री शरीर से 250 जन्मों और पुरुष शरीर से 250 जन्मों लेकर एक–एक लक्षण को सीखते हैं। इसीलिए अपने जीवन के प्रणालिका में भी

सीखने वाले विषयों के आधार ही हम इस जन्म लेते हैं, और इसीलिए सत्य को बताने के लिए पीछे नहीं हटना चाहिए।

(5) निर्भयता ।

पुरुष जन्मों में सीखने वाला एक और लक्षण है ''निर्भयता''। एक जन्म में, नहीं तो कुछ जन्मों में, निर्भयता से जीना सीखते हैं। कहां भी जाओ, जहां भी रहो, एक पुरुष निर्भयता से रहता है। इसीलिए एक पुरुष कहीं भी अकेला जा सकता है। अगर वही स्त्री है तो उसको किसी का सहारा चाहिए। स्त्रियों का शरीर कमजोर है, और कोमल है। स्त्रियां अकेला जाने का डर का मुख्य कारण अपना सच्छीलता खो जाने का। या कोई उसको मान भंग करने का भय रहता है।

लेकिन पुरुष गर्भवती नहीं बनता है। इसीलिए उसको सच्छीलता खोने का झंझट नहीं है। इसीलिए उस तरह का भय एक पुरुष में नहीं रहता है। पुरुष जन्मों में निर्भयता से जीना सीखना, यह भी एक कारण है। अगर पुरुष लोग डर रहा है, मतलब वह लोग धैर्य का लक्षण अभी नहीं सीखे हैं। और इतना ही नहीं, इससे पहले जन्म स्त्री जन्मों का लक्षण अभी निकला नहीं है। इसीलिए डरते रहते हैं।

मानव का मतलब न केवल शरीर, मनस, बुद्धि और आत्मा। यह बात हम बहुत बार कह चुके हैं। मतलब मानवों में शारीरिक स्थिति में जीने वाले हैं, मानसिक स्थिति में जीने वाले भी हैं। बुद्धि स्थिति में जीने वाले हैं और आत्मा स्थिति में जीने वाले भी हैं।

सहज है कि शरीर की स्थिति और मानस स्थिति में जीने वाले बहुत डरते रहते हैं। लेकिन कोई भी ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान द्वारा बुद्धि स्थिति में, अगर आ सकते हैं, तब अगर उनका शारीरिक बल नहीं भी हो तो, वह निडर होकर अपने बुद्धि कुशलता से किसी भी हालत को, समस्या को, धैर्य से सामने कर कर आ सकते हैं। अगर यह विषय हमें समझना है तो पंचतंत्र में एक कथा के बारे में जानते हैं।

खरगोश और सिंह का कथा।

एक जंगल में एक सिंह प्रवेश कर कर सारे जानवरों को अपने इच्छा अनुसार मारता रहता था। तब यह सारे जानवरों ने एक समावेश कर कर बात किए थे कि अगर ऐसे रहेंगे तो हम में कोई भी मनस शांति से नहीं जी पाएंगे। तो उस सिंह से हम एक समझौता कर लेते हैं। हर एक दिन हम में से एक जानवर उनके पास त्याग करने जाएंगे। तब वह किसी और के ऊपर आक्रमण नहीं करेगा, तब हम धैर्य से जी सकते हैं, कह कर एक निर्णय लिए थे। और सिंह से यह बात बता दिए और तब सिंह ने उसको सहमति दिया है। ऐसे एक-एक दिन एक जानवर उनके पास जाता था। लेकिन एक दिन खरगोश का नंबर आया था।

उस खरगोश ने सिंह के पास जाते-जाते सोचा था कि इस बार सिंह का पीड़न अगर निकलते हैं, तब कोई भी समस्या नहीं रहेगा। और अपनी बुद्धि कुशलता से सोच समझ कर सिंह के पास जाकर ऐसे कहा था। हे राजा! आप तो बहुत महान समझ रहे हो, लेकिन आपसे भी बलवान है। एक और महान सिंह इस जंगल में प्रवेश कर चुकी है। अब आपके नाटक आगे नहीं चलेगा।

तब उस सिंह को बहुत क्रोध आया था और गरजते हुए पूछा, मेरे से बलवान है क्या? वह कौन है? उसका काम अभी देख लेता हूँ। तब उस खरगोश ने अपने साथ लेकर उस जंगल में एक पुराना सा कुआं के पास लेकर जाती है। और उसमें उस सिंह का प्रतिबिंब दिखाता है और उस प्रतिबिंब को देखकर सिंह गरजता है। और उसकी गूंज सुनकर उसको और क्रोध आता है। और तुरंत उस कुएं में कूद पड़ती है और मर जाती है।

इस प्रकार उस खरगोश ने अपने बुद्धि कुशलता से उतना बड़ा सिंह को पराजित किया है। मतलब देह स्थिति से, और मनो स्थिति से, जीते वक्त कोई भी परिस्थिति हमें सामना नहीं कर पाते हैं। बहुत लोग समझते हैं कि बलवान होने से निर्भयता से जीवन जी सकते हैं। लेकिन बल से ज्यादा, धैर्य, बुद्धि, अगर रहेगा तो, कोई भी परिस्थिति को सामने कर सकते हैं। इसीलिए

कहते हैं कि शारीरिक बल से बुद्धि का बल महान है ।

इसीलिए मैं कहता हूँ की बुद्धि समुपार्जन कर लो। अगर इस जन्म में आप बुद्धि स्थिति तक पहुंचेंगे, तब आप बहुत कुछ हासिल किए हैं। और बहुत भाग्यवान है। अगर आप तमोगुण में और रजोगुण में हैं, मतलब आप बुद्धि स्थिति तक नहीं पहुंचे हैं। केवल सात्विक गुण में आने के बाद, आप बुद्धि स्थिति में आएंगे। उसके लिए तीव्रता से ध्यान साधना करना चाहिए और सात्विक शाकाहार खाना चाहिए। यह दोनों काफी है, और कुछ जरूरत नहीं है।

जब आप भीमावरम आएंगे तभी तीव्रता से साधना आप कर सकते हैं। उतना ही नहीं सही साधना ''श्वास पर ध्यास'' ध्यान रखकर निशब्द ध्यान कर सकते हैं। और कहीं भी जाकर सही साधना नहीं कर पाएंगे। गाइडिंग कहेंगे, म्यूजिक कहेंगे, और कहेंगे की पत्री जी ने लगाया है। ऐसे बहुत सारे कारण बताकर सही साधना आप नहीं कर पाएंगे, और ऐसे कितने भी साल करेंगे सब कुछ बेकार हो जाएंगे।

केवल तीव्र साधना करने से ही, आप बुद्धि स्थिति तक पहुंच सकते हैं। तब आपके जीवन में कोई भी समस्या आने से भी आप बुद्धि कौशलता से सामने कर सकते हैं। सामने वाला कितना भी बलवान हो या नहीं हो, उससे कुछ भी संबंध नहीं है। उसके लिए बल का जरूरत नहीं है।

पति-पत्नी के बीच में भी या, कहीं भी कोई भी संदर्भ में, जो भी कुछ बात करता है उसका बराबर समाधान अगर हम बता सकते हैं, तब सामने वाला आलोचना करना शुरू करता है। और बात नहीं कर पाता है। और अगर वही आप बुद्धि स्थिति पार कर कर आत्म स्थिति में आ जाते हैं, तब आप अपने प्राण को भी परवाह नहीं कर कर कोई भी परिस्थिति को धैर्य से सामने करते हैं। उनके लिए शारीरिक बल की जरूरत ही नहीं है, सिर्फ चाहिए निर्भयता।

आत्मा मतलब भगवान। भगवान को भय किस लिए? सब कुछ निर्भयता ही है! इसीलिए कोई भी परिस्थितियों में वह निर्भयता से सामने

करते हैं और निर्भयता का प्रदर्शन करता है।

जो भी आत्मा स्थिति में रहता है, जैसे मोहम्मद प्रवक्त। वह बहुत सारे युद्ध में भाग लेते थे। एक बार एक युद्ध में शत्रु ने उसको गिराकर चाकू उसको गले पर लगा दिया और पूछा, अभी बताओ मोहम्मद ! आपको कौन रक्षा करेगा, मैं देखता हूँ। तब मोहम्मद प्रवक्ता ने निडर होकर कहता है कि, मुझे अल्लाह रक्षा करेगा। इतना निडर से मोहम्मद ने जब बताया था, तब शत्रु थोड़ा हिल गया था। उसी क्षण में मोहम्मद ने उनके हाथों से चाकू छीन लिया और शत्रु के गले पर लगाकर पूछा, अब आपको कौन रक्षा करेगा, मैं देखता हूँ। देखिए ऐसे हारने वाले परिस्थितियों से भी सामना कर कर, बलवान लोग को निर्भयता से सामना किया था।

जो आत्मा स्थिति में रहते हैं, वह कभी भी ऐसे निर्भयता से जीते हैं। हम पत्री जी को ही देख लेते हैं, मोहम्मद प्रवक्ता जैसे ही आत्मा स्थिति में रहने वाले, महान लोग हैं। उस स्थिति में है तभी तो, उनसे बताए गए सत्य विषयों को जबकि लोक विरुद्ध है, कोई भी उस सत्य विषयों को जीर्णन नहीं कर पाते थे। लेकिन तब भी धैर्य से बताते थे। उसने बताया कि विग्रह भगवान नहीं है, विग्रह का आराधना नहीं करना और सत्य का आराधना करने को कहा था। कुछ जगहों में अज्ञानी लोगों के बीच में बहुत सारे झगड़े आते थे। न केवल अपने बातों से, लेकिन शारीरिक रूप से उस पर हमला करते थे। आत्मा स्थिति में रहने वाला पत्री जी निर्भयता से जो उनको कहना था, सत्य को धैर्य से कहते थे।

जब सत्य को निर्भयता से कहते हैं, प्रकृति का सहकार रहती है। ऐसी परिस्थितियों से प्रकृति के सहायता से वह लोग आसानी से सामना करते थे। सच में इतने सारे लोग हमले करते वक्त भी पत्री जी, अकेला, उस प्रकृति के सहायता से उस स्थिति से निकल जाते थे।

मैं भी वही कहता हूँ। सत्य को पकड़ना चाहिए। सत्य को बोध करना चाहिए। सत्य में जीना चाहिए। तब प्रकृति का सहकार आपको पूरी तरह मिल जाएगी। आप लोगों को एक ही कह रहा हूँ, पुरुष है आप, या

दुर्बल शरीर स्त्री हो, आप कोई भी हो, निर्भयता से अगर प्रवर्तन करना है और जीना है, आत्मा स्थिति को प्राप्त करना चाहिए। कम से कम बुद्धि स्थिति तक पहुंचना चाहिए। तब आप किसी चीज से डरते नहीं है।

जब मैं कहता हूँ कि आप भीमावरम आने के लिए बहुत लोग कहते हैं कि, मैं अकेला नहीं आ सकता हूँ। मेरे पैसे खो जाएंगे, मेरा सोना खो जाएगी, नहीं तो मुझे कुछ ना कुछ हो जाएगा, कर कर बताते रहते हैं। अगर आप किसी को हानि नहीं करेंगे, आपको किसी की वजह से हानि नहीं होगा। अगर आप किसी का पैसा या किसी को मनमानी नहीं किया है तो नष्ट नहीं होता है, तब आपका पैसा कोई नहीं लेगा।

अगर आप दूसरों को मनमानी करते हैं, तब आप जितने भी ताला लगा लो, अपने घर पर कोई ना कोई आकर चुरा लेगा। लेकिन अगर आप किसी का कुछ आशा नहीं किया, या मनमानी नहीं किया, अगर किसी कारण से भी अगर भूल जाते हैं अपने घर को ताला लगाना, तब भी कोई नहीं आएगा। अगर कुछ हुआ मतलब वहां पर आपने कुछ तो किया होगा।

कुछ लोग स्त्रियों को उठाकर लेकर जाते हैं, और ब्रोतल हाउस में बेचते हैं। लेकिन वह सभी लोग अपने पूर्व जन्मों में पुरुष रहकर किसी को रेप किया या, उठाकर लेकर गया। यह सभी लोग स्त्रियों को दुख देने वाले ही हैं। इस जन्म में स्त्री का जन्म लेकर ऐसे नरक अनुभव कर रहे हैं।

याद रखिएगा की अगर आपके पास धर्म है, न्याय है, नीति है, तब आपको डरने का कोई जरूरत नहीं है। दूसरे लोगों से आप क्यों तुलना करते हो? जब ऐसी गलतियां आप करेंगे, तभी आप डरेंगे! आप लोग ऐसे करने वाले नहीं है ना! जो भी प्रारंभ जन्मों में होते हैं, वही लोग ऐसे करते हैं, और सीखते हैं। वह बात उनको संबंधित है। अगर आप मुर्ख है तभी समझेंगे है कि उन लोगों के साथ हुआ तो मेरे साथ भी क्यों नहीं होगा? आप सभी लोग 350 जन्म पार कर चुके हैं। वह सभी आपने पार कर चुके हैं।

वह सभी पाठों खत्म हो गया है। छीन लेना और आपको कोई छीना, रेप करना ,रेप करवाना, हत्या करना, हत्या होना, यह सब हो गया है।

अभी आपका स्थिति क्या है ? ज्ञान प्राप्त कर कर बिना जन्म वाले स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न करना है ! आप उस स्थाई तक पहुंचे हैं।

मैं आपको बता रहा हूँ कि, आपके इतने सारे जन्म हो गए हैं। तब भी आपका भय नहीं जा रहा है मतलब आपके मूर्खतापन नहीं गया है। अगर आपके अंदर आपने कुछ किया है का संदेह है तो, अगर है भी तो, आप घर में भी रहेंगे तो वह कुछ हो सकता है। मैं यकीनन बता रहा हूँ आप जितने भी सावधानियों (precautions) लेलो, आपको जो अनुभव करना है, उससे आप भाग नहीं सकते हैं। बहुत लोग बाहर जाएंगे तो एक्सीडेंट में पड़कर, हाथ पैर को खोना पढ़ने का डर लगता है। तभी घर में ही सजग हो कर रहते हैं। लेकिन जब घर में रहते हैं, बाथरूम में जाकर फिसलकर अपने पैर को टूटते हैं। कितने लोग ऐसे नहीं हैं ? कर्म का फल से तो कोई भी भाग नहीं सकता है। वह असंभव है।

अगर आपको किसी से हानि नहीं होना है, आपको किसी चीज से भय नहीं होना है तब आपकी वजह से किसी को कष्ट नहीं करना है, नष्ट नहीं करना है, हानि नहीं होना है, हिंसा नहीं करना है। इन विषयों में जागृत होना चाहिए, सावधान रहना चाहिए। अगर यह कर सकते हैं तब आपको कोई भी, किसी से कुछ नहीं होगा।

बहुत लोग कहते हैं कि हमारे घरों में चीटियां हैं, चूहा हैं, की कीटकें हैं, क्या करें ? आपको उनको मारना नहीं है। आप भी जियो, तब कुछ भी आपके पास नहीं आएगा। चाहे वह मच्छरों है, आपके घर में आएंगे, लेकिन आपके पास नहीं आएंगे। वह स्थिति आपको प्राप्त करना चाहिए। अगर आप बुद्धि स्थिति तक नहीं आ पाते हैं, तभी ऐसी स्थितियों के बारे में आप सोचते हैं।

अगर आपको लगता है कि वह चूहा आपको कुछ कर लेगा, तो उसको पकड़ कर बाहर फेंक दो। उसको दवाई लगाकर मारना नहीं। उस कीटकों को उठाकर बाहर फेंक दीजिएगा। अगर आप ऐसे करते रहेंगे, तब कोई भी आपके पास नहीं आएंगे। आपका भाव को ग्रहण करने का शक्ति

उनके पास रहता है। लेकिन उनके भाव का ग्रहण करने का शक्ति आपके पास नहीं है। आप देखिएगा, कोई भी जानवर जब आपके सामने आएंगे तो, वह पहले आपको आपकी आंखों में देखते हैं। आपकी आंखों द्वारा आपका भाव को वह ग्रहण कर सकते हैं। अगर आप उनको हानी करने का उद्देश्य रखते हैं, तब उसको मारने के लिए एक लकड़ी को ढूंढते रहेंगे, को सोचते रहेंगे। जब आप उसको हानी करने का सोचते हो, तभी वह आपके ऊपर आक्रमण करता है।

इसीलिए अगर आप धर्म के हिसाब से जिएंगे, किसी से डरने का जरूरत नहीं है। निर्भयता से जिएंगे। इसीलिए यह सभी हम सीख रहे हैं। जितना समय जिया है वह महान नहीं है, कैसे जिए हैं वह मुख्य है। अगर हर चीज पर डरते हैं, आप हर वक्त आंदोलन रहेंगे, अशांति में रहेंगे, दुख में रहेंगे, तब यह जीवन किस लिए?

तभी मैं यकीनन कह रहा हूँ, भीमावरम क्लास में कुछ महीने तक आकर तीव्रता से साधना करिए। बुद्धि स्थिति में आइए, तब देखिए आपके अंदर कितना बदलाव आते हैं। आप धैर्य से जीते हैं और निर्भयता से जिएंगे। और सबको इस तरह जीने का प्रोत्साहन करेंगे।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

Tatavarthy Raghavarao Sir Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Which is the right Meditation ?	Rs.100
4.	Die before death!	Rs.120
5.	The Law of Karma	Rs.100
6.	What is Meditation?	Rs.80
7.	True Path	Rs.80
8.	Why soul-knowledge	Rs.70
9.	What comes after death ?	Rs.70
10.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
11.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
12.	What is Intention?	Rs.50
13.	Why is this life?	Rs.50
14.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
15.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
16.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।.. Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।.. Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।.................................. Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।.. Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।................................ Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?............................ Rs.120/-
7. भगवान कौन है।.. Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।.. Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ ।......................... Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।.. Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ?..................................... Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।................................. Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?................................ Rs.100/-
14. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.................Rs.80/-
15. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।..............................Rs.80/-
16. आत्म हंतक कौन होता है ।...............................Rs.70/-
17. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
18. दुख निवारण का मार्ग.......................................Rs.75/-
19. उत्तम पुरूष...Rs.60/-
20. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ?.............................Rs.60/-
21. निर्वाण मार्ग..Rs.60/-
22. सत्य..Rs.50/-
23. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?......... Rs.50/-
24. गुरू को पहचानना कैसे ?..................................Rs.50/-
25. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
26. शाकाहार ही मानव का आहार है!...............................Rs.50/-
27. ब्रह्मं क्या है ?...Rs.50/-
28. संकल्प अर्थात ?..Rs.40/-

For Books Contact : TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthyvari Street, BHIMAVARAM-534201.
CELL: 9490171853, 9440309812

सहज बात है कि अपने आप को या स्त्री, या पुरुष समझते हैं। लेकिन यह सब हमारे जन्मे हैं। अगर स्त्री हो, तब स्त्री जन्म, पुरुष है तो पुरुष जन्म है। मतलब हम न तो कोई स्त्री है, न कि पुरुष है, हम सब आत्माएं है। हम जो आत्माएं है, या तो पूर्णात्मा से आए हैं, या तो मूलात्मा से निकले हुए अंशात्माएं है। जब इस अंशात्मा एक मानव शरीर में प्रवेश करता है, तब उसे जीव कहलाते हैं।

उस जीव को उस पूर्णात्मा, एक लक्ष्य निर्देश करती है। तुम इस भूमि पर बहुत सारे पाठों सीख कर, ज्ञान प्राप्त कर कर, हमारे स्थाई तक पहुंचना है, मतलब पूर्णात्मा बनना चाहिए। तब तक तुम जन्मे लेते ही रहेंगे। यह बात कहकर उसको जन्म और मरण के चक्र में प्रवेश करते हैं। इस तरह सभी लोग मानव जन्म में प्रवेश करते हैं। तब से कर्म चक्र भी प्रारंभ होता है।

– ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

Rs.70/-